# सो बूझे जिस आप बुझाए
# भाग - क तों ख

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

**कक्का** : पैहला कक्का कर्म कांड, कूड़ी क्रिया रहण ना पाईआ । दूजा कक्का भेव ब्रह्मांड, ब्रह्माद फोल फुलाईआ। तीजा कक्का निरगुण सरगुण नाद, अनादी नाद शनवाईआ। चौथा कक्का पुरख अकाल वसे साथ, सगला संग निभाईआ। पंजवां कक्का गुरमुखां नाता तोड़े आदि जुगादि, काल महांकाल दोवें नेड़ ना आईआ। गोबिन्द कक्का सभ दी सुणे फ़रयाद, सका इक्को नज़री आईआ। कलिजुग जथा जगत आवाज़, कूक कूक सुणाईआ। कंघा कछ कड़ा करपान, चारे मिटदे रहण निशान, जगत हट्टो हट्ट विकाईआ। इक्को केस होए परवान, सीस ताज रहे बणाईआ। गोबिन्द कक्का कदे ना मिटे निशान, जिस मिल्या तिस निभया संग चोर यार ठग्ग लुट्ट सके ना कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा कक्का बिन गोबिन्द किसे ना रक्खा, सृष्ट सबाई दित्ती भाखिआ भखा, भिखक होवे सर्ब लोकाईआ । (२१ जेठ २०२० बि)

**कसाई** : भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई, कोई ना जाणे सार एह बिंग कसाई। (४ चेत २००७ बि)
माया ममता चल्ले करद, जगत कसाई रूप वटाईआ। (२१ हाढ़ २०२१ बि)
कलिजुग कूड़ी क्रिया वेख कसाई करद, जीव जंत देण दुहाईआ । (२० माघ २०२१ बि)
शरअ कसाई बणी करद, कतलगाह वेखी लोकाईआ। (८ कत्तक श सं २)
गुर अवतार पैगम्बर कहण शरअ छुरी कसाई बणी करद, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कतलगाह दिसे लोकाईआ। (११ फग्गण श सं २)

**कसुंभड़ा** : सति सरूप ना चढ़या रंग, रूप कसुंभड़ा सर्ब लोकाईआ ।(२० सावण २०२० बि)
आत्म अन्तर प्रेम प्रीती साचे रंग कोई ना रते, कसुंभड़ा रंग चारों कुण्ट नज़री आईआ। (२६ जेठ २०२१ बि)

आत्म परमात्म चाढ़ के रंग, कसुंभड़ा रूप दए गवाईआ। (४ मध्घर २०२१ बि)
नाम खुमारी प्रेम प्रीती चाढ़नी रंगण, कुसुंभड़ा रूप ना कोई वटाईआ। (१६ हाढ़ श सं १) (कच्चा पिला रंग)

**कसवट्टी : कसौटी** : नाम कसवट्टी परख वखाया, कंचन सोना रूप वटाईआ। (६ फग्गण २०१६ बि) लक्ख चुरासी नाम कसवॅटी परख, गुरमुख थोड़े बाहर कढ्ढाईआ । (२५ पोह २०२१ बि)
हरिजन हरिभगत सदा सुहेला लए परख, नाम कसवट्टी इक्क लगाइंदा। मनमुखां उत्ते कदे ना करे तरस, जो जन हरि नाम भुलाइंदा। (१८ जेठ २०१८ बि)

**कदमबोसी** : जिस दे गुर अवतार पैगम्बर पूजदे कदम, कदमबोसी कदीम दी रीती चली आईआ। ओथ्थे कोई तत्तां वाला पैर नहीं जिस विच्च लभ्भणा पए पदम, चिन्नां वाला निशान ना कोई वखाईआ । इक्को जोत जोत विच्च सारे बैठे मग्न, वक्खरा डेरा ना कोई लगाईआ । (३ कत्तक श सं २) सदी चौधवीं कहे मुहम्मद होया सदमा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ । कदमबोसी करे कोई ना परवरदिगार कदमा, कदीम दी रीती रहे भुलाईआ। झगड़ा पै गिआ आहला अदना, अमीर गरीब दए दुहाईआ। (३ मध्घर श सं ४)
पीर पैगम्बरां कदमबोसी लै के सीस झुकाणा, कदीम दा मालक संदेशा इक्क सुणाईआ। अन्त कन्त भगवन्त सभ दा वक्त चुकाणा, चारों कुण्ट दए समझाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया खेल मिटाणा, मिट्टी खाक विच्च रुलाईआ। (२२ अस्सू श सं ६) (पैर चुम्मण दी क्रिया)

**कदीम** : जन भगत कहण प्रभू तेरा झगड़ा सदा कदीम, पूरब नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे मुनीम, लिख लिख लेखा गए कलम छाहीआ। (२६ पोह श सं १) जन भगतो जुगाँ पिच्छों एह समां आउँदा कदी कदी, कदीम तों प्रभ दी रीती चली आईआ। (१ माघ श सं १) (पुराणा)

**कपड़** : काया कण्पड़ होए छार, सोहँ शब्द संग रह जावे। (१ माघ २००७ बि) काया कपड़ा कूड़ हंढ्ढावणा। तीर्थ छप्पड़ झूठा न्हावणा। ना कोई सके अपड़, प्रभ अबिनाशी हत्थ ना आवणा। माया रूपी दित्ता कण्पड़, भरम भुलेखा डाहडा पावणा। आप कराए पापी पप्पड़, विषे विकारां विच्च रुलावणा। सोहँ शब्द मारे थप्पड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां मार्ग पावणा। (७ जेठ २००७ बि)

**कपाल** : पुरख अबिनाशी होए मेहरवान, चरन चरनोदक दए मुख चुआया। अमृत झिरना झिरे महान, कपाल रेखा खोल्ह वखाया । (१२ अस्सू २०१७ बि मथ्था)

**कबूतर** : सदी चौधवीं कहे मैं वेखी इक्क बारी जिस विच्च दिसया इक्क कबूतर, नैण मूंद ध्यान लगाईआ। (४ मध्घर श सं ४)

**कमजात** : प्रभ अबिनाशी साचा नाता। भुलया जीव जिउँ रंडी कमज़ाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कल पछाता। (१३ जेठ २०१० बि)
प्रभ अबिनाशी ना पछाता, होई नार वड्ड कमज़ाता। गई जहानों सख्खणी, ना मिले सच्ची दाता। (७ जेठ २०११ बि)
कलिजुग नार कुलक्खणी वड्ड कमज़ात, ना मिल्या कन्त सुहाग, चारों कुण्ट अन्ध अंधिआरे। (२१ मध्घर २०११ बि)
मन मनसा दर दर फिरे नार कमज़ात, लक्ख चुरासी रही परनाईआ । (२५ जेठ २०२१ बि)
मन मत घर रहण ना देवें नार कमज़ाता, कुलखणी भज्जे वाहो दाहीआ। (१८ सावण २०२१ बि) (नीच)

**करतूत** : वेखीं किसे दे कर्मां दी ना वेखीं करतूत, निहकर्मी हो के पार लँघाईआ। (१२ चेत श सं १) करी कुड़माई जूठ झूठ, हउमे हंगता वज्जी वधाईआ। लक्ख चुरासी वेख करतूत, तेरे तेरी कीती गए भुलाईआ। कलिजुग सारा लँघ गिआ अन्तम पिच्छे रह गई निक्की पूछ, सो गोबिन्द आपणी हत्थीं दए कटाईआ । (१ भादरों २०२० बि) (करनी)

**करेवा :** उह तुहाढ्ढे मस्तक लाउण आया थेवा, आपणा रंग रंगाईआ। वेखयो दुहागण हो के किसे साध सन्त दा करयो ना करेवा, बिना खुदावंद करीम मालक महिबूब मुहब्बत खावंद ख़सम पती परमेश्वर नज़र कोई ना आईआ। (२६ पोह श सं ४)
गुर अवतार पैगम्बर चाचे चंगे कि पुरख अकाल बाप, पयो नूं छड्ड के क्यों मां नूं करेवे रहे कराईआ। हुण चादर पौण दा हटा देणा रिवाज़, इक्क ख़सम नूं छड्ड के दूजे अंग ना कोई लगाईआ । (२७ पोह श सं ४)
सतिजुग कहे . . . . . वेखीं आपणे हुंदिआं मेरे विच्च आपणी आत्मा नूं अवतार पैगम्बर गुरू कराईं ना कोई करेवा, दूसर हत्थ ना कदे फड़ाईआ। (१६ पोह श सं ६)
जन भगतां आदि जुगादि दूसरा करन देवे ना कदे करेवा, करनी दा करता मालक आप अखवाईआ। (२४ चेत श सं १२) (विधवा स्त्री नाल कीता पुनरविवाह)

**करंग** : चार कुण्ट दिसण पए करंग, कलिजुग जीआं मास किसे ना खावणा। (१७ जेठ २०१० बि) दो जहान जगत निशान दिसे करंगा, हड्ड नाड़ी मास रो रो मारे धाईआ। (७ मध्घर श सं ६) (सरीर दीआं हड्डीआं दा पिंजर)

**कां :** आपणा कीआ लैणा भर, जो जन जाए बचन हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काग रलाए कागाँ डार। कागाँ संग रलया काग। काम तृसना ना गई आग। साचा दर ना मात दिसणा, अन्तम होए माड़े भाग। शब्द लिखावे काहना कृष्ना, ना कोई जाणे झूठा राग। (४ कत्तक २००६ बि)
जो रसना पढ़ पढ़ दस्सदे रहे जग, अमल आपणा ना कोई कमाईआ। उह जूनां

विच्चों जून भोगण कग, कागाँ विच्च उह काग जो विष्टे विच्च समाईआ। ढोरां दे खावण हड्ड, चम्म दृष्टी चरम नाल मिलाईआ। पढ़या लिखया एथ्थे जाणा छड्ड, बिन सतिगुर जगत ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। (१८ हाढ़ २०२१ बि)

कलिजुग जीव हँस बुद्धि होए कां, रसना काग वांग कुरलाईआ। कोई खावे सूर कोई खावे गाँ, शरअ कूड़ी करे लड़ाईआ। (२३ हाढ़ २०२१ बि)

पढ़दे पढ़दे होए हँस कां, बुद्धि काग वाग कुरलाईआ। बिन कलमिउँ बिन शरअ बिन ज़बा खांदे सूर गाँ, छुरी हक़ हलाल हत्थ ना किसे उठाईआ। (७ सावण २०२१ बि)

**काया** : मन मति बुद्धि उपा के, जीव दी काया बणा के, विच्च लोभ हँकार वसाया। (६ भादरोंग२००६ बि) ऐसा खेल प्रभ आप कमाया। जुग कल पलटाउण लई तज़ी काया। जोत सरूपी बण के आया। (१३ मध्घर २००६ बि)

घर काया काअबा मन्दर मसीत, मसला हक़ हक़ दृढ़ांइदा। (२८ फग्गण २०१६ बि) नेत्रहीण सृष्टी अन्धी, अन्धकार ना कोई चुकाईआ। तन काया माटी पोच के बणदी चंगी, अन्तर मैल दुरमत धो ना साफ़ कराईआ। बाहरों पट्टी वौंहदी कंघी, अंदर मींढी सच ना कोई गुंदाईआ। बाहरों लाल गुलाल मैंहदी रंग रंगी, अन्तर प्रेम रंगण नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल इक्क वरताईआ। (२५ जेठ २०२१ बि)

काया अंदर बहत्तर नाड़, अगनी तत्त तत्त तपाईआ। काया अंदर मन मत बुध करे विचार, मन मनसा नाल मिलाईआ। काया अंदर आसा तृसना करे विचार, मोह ममता रही समाईआ। काया अंदर इक्क लक्ख अस्सी हज़ार भूत प्रेत फिरे बेताल, आपणा ताल वजाईआ। काया अंदर पवण स्वासी खेल निराल, स्वास स्वासां नाल रखवाईआ। काया अंदर सुरती होए बेहाल, हरि का भेव ना जाणे राईआ। काया अंदर कूके काल, काल नगारा डंक वजाईआ । काया अंदर सच्ची धर्मसाल, सतिगुर वसे सच्चा माहीआ। काया अंदर शाह कंगाल, कंगालों शाह रूप वटाईआ । काया अंदर ख़ज़ीना धन माल, धन दौलत दए वखाईआ। काया अंदर मिले पीण खाण, तृसना तृखा भुक्ख गवाईआ। काया अंदर सच मकान, महिफल हरि जू रिहा लगाईआ। काया अंदर जगत शैतान, अठ्ठे पहर करे लड़ाईआ। काया अंदर मिले भगवान, घर मेला सहज सुभाईआ। गुरमुख सिख्या साची जाण, घर सतिगुर आप जणाईआ। जो जन चरनी डिगे आण, तिस दे घाटे पूरे दए कराईआ। दुःख दर्द रहे ना विच्च जहान, ज़हमत नेड़े कोई ना आईआ। नाता तोड़े पवण मसाण, सीस चक्कर ना कोई भुआईआ । टूणा जादू ना कोई निशान, मड़ी गोर ना कोई वखाईआ। बीर बेताले होण शर्मसान, रिध सिध ना कोई चतुराईआ। कर किरपा दुःख मेटे विच्च जहान, चिन्ता चिखा रोग सोग दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया अंदर साचे मन्दर तिन्न सौ सट्ठ हड्डी वेख वखाईआ। (१४ अस्सू २०१६ बि)

काया काअबा मन मौलाणा। सुरत शब्द ज्ञान सच कुराना। (२२ हाढ़ २०११ बि)

झगड़ा मेटणा मन्दर मसीत, काया काअबा इक्क दरसाईआ। (१२ फग्गण श सं ८)

इक्को काया काअबा सभ नूं दस्स दे मन्दर मसीत, गुरूदवार गुरदेव इक्को देणा समझाईआ। (२ हाढ़ श सं ६)

**कादर** : उपर धरते जीव जंत निवार। कादर करते तेरी महिंमा अपर अपार। (१४ भादरों २००६ बि)

हरि हरि हरि कादर करता धरनी धरता वड वड हकीम है। (३ माघ २०१० बि)

सो करता करीम कादर करे खेल बिन सरीर, बेनज़ीर धार चलाईआ। (१८ हाढ़ २०२१ बि) (कुदरत वाला)

**काअबा** : काया काअबा गुरसिख हाज़ी वड़ जा साचे मक्कण, जिस दा ऊँचा इक्क मनारा। पंजे चोर अग्गों डक्कन, शब्द खण्डा मारीं दो धारा। (१७ मध्घर २०१० बि)

**किआमत** : मुहम्मद ने किहा प्रभू खुदा तेरा किथ्थे किआम, किआमगाह दे जणाईआ। खुदा ने किहा फ़र्ज़ंद किथ्थे तेरा इस्लाम, इसम दे समझाईआ। मुहम्मद ने किहा मैं तेरा गुलाम, फ़रमाबरदार अखवाईआ। खुदा ने किहा जिस वेले अवतार पैगम्बरां दा लेखा मुकावां तमाम, तमां तमन्नां मज़हबां वाली मिटाईआ। जगत दी मेटां अन्धेरी शाम, आपणा साचा चन्द चढ़ाईआ। इन्सानां नाल लड़ा के इन्सान, हैवानां नाल हैवान दिआं बणाईआ। किसे दा रहे ना जगत निशान, गुर अवतार पैगम्बर मिट जाए आण, सजदा करे ना कोई सलाम, डण्डावत बन्दना ना कोई नाम, इक्को हुक्म चले श्री भगवान, ओस नूं मुहम्मदा कयामत कहिंदा जहान, जो पिछली नूं अगली ते अगली तों पिछली दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ।

शब्दी कलमे किहा मुहम्मदे कयामत, कयामते कुल ज़ू ज़ाबते विच्च रखवाईआ। जिस वेले गुर अवतार पैंग़ंबरां दी आवे शामत, शामिआने मज़हबां वाले उखड़ाईआ। इक्क दूजे दी देवे ना कोई ज़मानत, साथी संग जाण तजाईआ। नाम रहे ना नाम नयामत, रस रसना ना कोई चखाईआ। कलमा नाम दी करे मज़ाहमत, ते नाम कलमे नाल टकराईआ। किसे दी चले ना कोई सिआणप, बुद्धि करे लड़ाईआ। मन दी मनसा कायनात होवे गुलामत, गुलामी विच्च आपणा आप पवाईआ। मुहम्मदा ओस नूं कहन्दे खुदा दी कयामत, जो सभ दी खुदी दए मिटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर लक्ख चुरासी जीव जंत सारी सृष्टी धरती असमान मेरी आरज़ी इक्क दूजे कोल अमानत, ते ज़मीन आसमान साथी किसे दा नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। (२४ पोह श सं ४)

**किशती नईआ नौका** : सोहँ शब्द कलिजुग साची नईआ। (१२ विसाख २००८ बि)

महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ चलाए साची नईआ। साची नईआ जगत चलाए। गुरमुख विरले आप चढ़ाए। मदिरा मासी शौह दरया रुड़ाए। (५ विसाख २००६ बि)

जिस दा आदि अन्त ना कोई किनारा, किशती नईआ नौका दो जहान रिहा चलाईआ। (१७ भादरों श सं ८)

सच दे उतरे कोई ना घाट, नईआ नौका नाम ना कोई चढ़ाईआ। (१४ भादर श सं ८)

**किरतम :** किरतम नाम जपे जो मेरा। मातलोक विच्च ना होए फेरा। (१५ भादरों २००६ बि) कलिजुग किरतम कर्म प्रभ आप विचारा। दे दरस सिख पार उतारा। (१६ जेठ २००७ बि)
कोटन कोट रूप करतारा, किरतम भेव ना कोई जणाईआ। (२७ पोह २०१७ बि)
सकल कुसल कुसल कर्म किरतम किरत आपणी झोली लए डार, दूसर संग ना कोई रखाईआ। (१८ फग्गण २०१७ बि)

**किर्म** : विष्टा विच्च विष्टा जंत बणाया। लक्ख जून एह किर्म बणाया। (२५ पोह २००६ बि) जगत क्रिया गुण हार, कूड़ा किर्म बण बण खाइंदा। (१६ मध्घर २०१८ बि) (कटाणू)

**किलविख** : सतिगुर पूरा जाणीए, किलविख पाप गवाए। (१३ जेठ २०१० बि) हरिचरन तृष्ना भुक्ख किलविख पाप सन्ताप सर्ब मिट जाण। (११ मध्घर २०१० बि) (पाप)

**कोटन कोट** : आपणा नाउँ हरि समझाए, वेला अन्तम आप दरसाइंदा। सोहँ शब्द हरि साचा उपजाए, ना कोई मेट मिटाइंदा । सोहँ रूप निरगुण सरगुण खेल खलाए, आदि जुगादि आपणी रचना आप रचाइंदा। महाराज निरगुण आपणा ख़ताब वड्डिआए, शेर सिँघ सरगुण वेस वटाइंदा। अन्तम ख़ाकी ख़ाक समाए, विष्नूं तेरा मेला मेल मिलाए, आपणी धारा आप चलाइंदा। विष्नूं रूप साकार हरि रघुराए, भगवन भगवान जोती जोत रुशनाए, रूप रेख ना कोई वखाइंदा। तिन्नां लोकां तिन्नां धारा तिन्नां सिकदारा इक्क वखाए, विष्न ब्रह्मा शिव सीस हत्थ टिकाइंदा। आपणा नाअरा आप सुणाए, वेद कतेब भेव ना पाइंदा। कोटन कोट अवतार दर दुआर बैठे सीस झुकाए, निउँ निउँ चरन ध्यान सर्ब लगाइंदा । कोटन कोट गुरू गुर मंगण भिच्छया जाए, पुरख अबिनाशी वड भण्डारी आप वरताइंदा। कोटन कोट साध सन्त रहे बिललाए, नेत्र नीर सर्ब वहाइंदा। कोटन कोट भगत भगवन्त राह तक्कण जाए, अद्धविचकार सर्ब डुबाइंदा। कोटन कोट ईसा मूसा संग मुहम्मद ख़ाकी ख़ाक रमाए, ख़ालक नज़र किसे ना आइंदा। कोटन कोट जुग बीते काल, कोटन कोट ब्रह्मा शिव विष्न बणे कंगाल, कोटन कोट भरम भुलाइंदा। कलिजुग अन्तम प्रगट आप होए दीन दयाल, मंगण दर किसे ना जाइंदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग ब्रह्मा विष्न शिव अवतार गुर पीर पैगम्बर साध सन्त औलीए पीर शेख़ करदा आया प्रितपाल, प्रितपालक आपणा नाउँ रखाइंदा । कलिजुग अन्तम अन्त श्री भगवन्त नर नरायण साचा कन्त बण के आया एका मंगत, लक्ख चुरसी विच्चों लभ्भी मुठी संगत, दूसर दिस किसे ना आइंदा। विष्नूं तेरा भंडारा गुरसिख दुआरा नौं दुआर चढ़ी रंगत, तृष्ना भुक्ख ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आपणी खेल खलाइंदा। (१ पोह २०१७ बि)

करे खेल कोटन कोट वार असंख, असंख असंखां गणत ना राईआ। करे वेस कोटन कोट रूप बणाए बणत, रूप रंग रेख ना कोई जणाईआ । कोटन कोट वार करे आदि अन्त, आदि अन्त आपणी खेल खलाईआ । कोटन कोट वार आपणी महिमा गाए बेअन्त, बेअन्त बेअन्त बेपरवाहीआ। कोटन कोट वार आप आपणी करे मन्नत, कोटन कोट सीस झुकाईआ। कोटन कोट रूप अनूप आप अनन्त, अनन आपणा नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आपणे विच्च रखाईआ।

कोटन कोट रूप, सो पुरख निरञ्जण आप आपणे विच्च रखाइंदा। कोटन कोट भूप, हरि पुरख निरञ्जण आपणी गोद बहाइंदा। कोटन कोट दिशा कोट, आपणा खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव जणाइंदा।

कोटन कोट रूप हरि निरँकार, निराकार आप धराईआ। कोटन कोट रूप आदि निरञ्जण हो उजिआर, जोत निरञ्जण लए जगाईआ। कोटन कोट रूप खेल करे आप करतार, कोटन कोट किरन करते विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस रखाईआ।

कोटन कोट रूप श्री भगवान, भगवन भगवन संग रखाइंदा। कोटन कोट रूप अबिनाशी करता ना आए विच्च ध्यान, ध्यान ध्यान ना कोई वखाइंदा। कोटन कोट रूप वखाए आपणे सति निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खलाइंदा।

कोटन कोट रूप पारब्रह्म, पारब्रह्म आप उपजाईआ। कोटन कोट रूप ना मरे ना पए जम्म, कोटन कोट विच्च समाईआ। कोटन कोट रूप खेल करे अगम्म, अलक्ख अगोचर शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे विच्च रखाईआ।

कोटन कोट रूप सचखण्ड, सच साची धार रखाइंदा। कोटन कोट रूप वंडे वंड, वंडणहार दिस ना आइंदा। कोटन कोट रूप आपे जाणे आपणा अन्त, अन्त आपणे विच्च रखाइंदा। कोटन कोट रूप बणे नारी कन्त, कन्त नार आप हंढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बल रखाइंदा।

कोटन कोट रूप थिर घर दरबार, कोटन कोट गढ़ सुहाईआ। कोटन कोट घाड़त घड़े बण सुन्यार, कोटन कोट कुठाली रिहा गाल, कोटन कोट दाई दाया बणे आप करतार, कोटन कोट करनी किरत रहे कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाईआ।

कोटन कोट रूप आदि, आदि वेस धराइंदा। कोटन कोट रूप नाद, अनाद अनादी नाद वजाइंदा। कोटन कोट रूप बोध अगाध, अगाध बोध आपणा भेव खुल्ह़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाइंदा।

कोटन कोट रूप मार्ग ला, निरगुण खेल खलाया। कोटन कोट रूप सच दुआर वसा, बंक दुआर दए सुहाया। कोटन कोट रूप थिर घर वड्डिआ, थिर दुआर दए वडिआया। कोटन कोट रूप आपणा मेला आप मिला, आपणी सेज आप सुहाया। कोटन कोट रूप जननी बणे आप मेहरबां, जन जणेंदी माया। कोटन कोट रूप पुरख अकाल पिता मां पूत लए उपा, सुत दुलारा एका जाया। कोटन कोट रूप आपणा नाउँ प्रगटा, नाउँ निरँकारा दए

वडिआया। कोटन कोट रूप सुत दुलारा लए जगा, शब्दी नाअरा लाया। कोटन कोट रूप हुक्म दए सुणा, हाकम बणे सच्चे शहिनशाहिआ। कोटन कोट रूप सच सिँघासण दए वछा, आसण सिँघासण इक्क दरसाया। कोटन कोट रूप आपणा रूप आप सुहा, आपे वेखवखाया। कोटन कोट रूप बणे शाह पातशाह, शहनशाह सच्चा शहिनशाहिआ। कोटन कोट रूप सीस ताज लए टिका, जगत जगदीश वड वडिआया। कोटन कोट रूप अपणी हदीस आप रखा, आपे करे पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आपणा वेस वटाया।

कोटन कोट रूप करतारा, किरतम भेव ना कोई जणाईआ। कोटन कोट खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ा आप कराईआ। कोटन कोट रूप निरगुण जोत निरवैर निराकारा, पुरख अकाल आप कराईआ। कोटन कोट रूप समरथ पुरख करे खेल अपारा, महिमा कथ कथी ना जाईआ। कोटन कोट रूप वेखे विगसे करे विचारा, वेखणहारा आप हो जाईआ। कोटन कोट रूप नारी कन्त भतारा, बैठे सेज सुहाईआ। कोटन कोट रूप उच्ची कूकण करन पुकारा, आपणा नाउँ आप सुणाईआ। कोटन कोट रूप बणे शाह दारा, कोटन कोट बैठे सीस झुकाईआ। कोटन कोट रूप बणे भिखारा, कोटन कोट बैठे अलक्ख जगाईआ। कोटन कोट रूप आपे जाणे आपणी सारा, दूसर भेव ना कोई दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा भेव जणाईआ।

कोटन रूप असंख असंखा, निरगुण निरगुण धार प्रगटाया। जुग चौकड़ी काल किसे ना परखा, दीन दयाल बेपरवाहिआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगदे रहे दासा, दासी दास रहे ध्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप वखाया।

असंख गुण असंख अजाता, पुरख अकाल वड्डी वडयाईआ। ना कोई पिता ना कोई माता, दाई दाया ना कोई वखाईआ। ना कोई बंधप ना कोई नाता, ना कोई साक सैण ना भाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, ना कोई करे पढ़ाईआ। आपे जाणे आपणी वाटा, आपे बणे पान्धी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे हत्थ रखवाईआ।

साची खेल हरि निरँकार, आपणे हत्थ रखवाइंदा। करे खेल अपर अपार, पारब्रह्म भेव ना आइंदा। जगत चौकड़ी वसे बाहर, दिस किसे ना आइंदा। जुग जुग वेस करे विच्च संसार, वेस अनेका आप वटाइंदा। निरगुण सरगुण कर उजिआर, सरगुण निरगुण संग मिलाइंदा। देवे वस्त अनमुल अपार, मुल्ल कोई ना लाइंदा। जोती जाता बण करतार, अन्धेरी राता मेट मिटाइंदा। शब्द गाथा धुर धुनकार, नाथ अनाथां आप सुणाइंदा। सर सरोवर अमृत मारे एका ठाठ, बूंद सवांती मुख चवाइंदा। जुगा जुगन्तर फिरे नाठा, साची सेवा सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आपणी धारा आप रखवाइंदा। (२७ पोह २०१७ बि)

जन्म मरन विच्च कदे ना आया, पुरख अकाल वड्डी वडयाईआ। आवण जावण खेल रचाया, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्तम लए हंढ्डाईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा पन्ध दए मुकाया, ब्रह्मा विष्न शिव आपणी सरनी पाईआ। कोटन कोट ब्रह्मा बैठे दर सीस झुकाया, कोटन कोट विष्नूं बैठे झोली डाहीआ। कोटन कोट शंकर गल बाशक तशका

रहे लटकाया, हत्थ त्रेसूल इक्क उठाईआ। कलिजुग अन्तम पन्ध दए मुकाया, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। गुरमुख साचे लए जगाया, सोया कोई रहण ना पाईआ। पूरब लहणा इक्क वखाया, नेत्र नैणां दरस दिखाईआ । भाणा सहणा हुक्म जणाया, हरि भाणे वड वडयाईआ। तन बस्त्र गैहणा इक्क सजाया, नाम भूशन आप रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, करे खेल एका हरि, हरि मन्दर जोत जगाईआ। (१ माघ २०१७ बि)

गुरसिख हित्त हरि करतार, जुग जुग खेल खलाईआ। दूसर करे ना किसे प्यार, लक्ख चुरासी रही कुरलाईआ। नज़र ना आवे विच्च संसार, कोटन कोट बैठे राह तकाईआ। कोटन कोटी पढ़ पढ़ करन विचार, चौदां विद्या होई हलकाईआ। कोटन कोटी तीर्थ तट्टां होण ख़वार, अठसठ बैठे धूणीआं ताईआ। कोटन कोट सिर पाई बैठे छार, कोटन कोट जल धारा रहे वहाईआ। कोटन कोट जोग अभिआस करन विच्च संसार, कोटन कोट जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बैठे ताड़ीआं लाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना पावे सार, देवे दरस ना हरि रघुराईआ । कलिजुग अन्तम हो उजिआर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। जन्म जन्म दा लाहिआ भार, पूरब लेखा रहे ना राईआ। अन्तम शब्द तन्द बन्ने आप निरँकार, तन्दूआ तार ना कोई वखाईआ। दो जहान ना कट्टे कोई कटार, तीर तलवार ना कोई अंग लगाईआ। फड़ फड़ बाहों जाए तार, तारनहारा इक्क अखवाईआ। नाल रलाए सर्ब परवार, बिरध बाल जवान दए वडयाईआ। मनमुख रोवण ज़ारो ज़ार, हरि करता कवण खेल खलाईआ। दिवस मास बरख़ घड़ी पल आपे रिहा विचार, थित वार भेव ना राईआ। गुरसिख अट्टल रहे तेरा मुनार, जगत मुनारा ढह ढह ख़ाक मिलाईआ। गुरसिख तेरा गुर गुर मंगे दरस दीदार, गुरसिख गुर गुर एका धाम सुहाईआ। अन्तम मेला अन्तम धार, जोती जोत जोत मिलाईआ। जिस जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गाया एका वार, एकँकारा लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, चार जुग दा पिछला लेखा लिखणहार दीन दयाला, करे खेल जगत निराला, लहणा चुक्के काल महांकाला, सचखण्ड वखाए सच्ची धरमसाला, धुरदरगाही होए आप सहाईआ। (१ माघ २०१७ बि)

कोटन कोट जन्म तप अभिआस, लेखा लेख ना कोई लगाईआ। कोटन कोट डूंघी कंदर वड़ वड़ बैठे डूंघे खात, नैण मूंद आसन लाईआ । कोटन कोट आप आपणा कर कर घात, बैठे राह तकाईआ। कोटन कोट उच्चे टिल्ले चढ़ चढ़ पर्बत रहे झाक, औदा जांदा दिस ना आईआ। कोटन कोट दिवस रैण लग्गे रहे खोलण ताक, बन्द किवाड़ी ना कोई खुलाईआ। कोटन कोट बण बण बैठे पाकी पाक, मन दी मैल ना कोई धवाईआ। कोटन कोट बैठे साकी साक, नाम प्याला जाम ना कोई प्याईआ। कोटन कोट शाह सवार बैठे मार पलाक, आपणा असव रहे दौड़ाईआ। कोटन कोट मनमुख करन चालाकी, सच चालाकी ना कोई कमाईआ। कोटन कोट तन रमाई बैठे ख़ाक ख़ाकी, धूड़ मस्तक मिली ना साची शाहीआ। कोटी कोट गुरदर मन्दर मसजद बहि बहि रगढ़दे नाक, बिन सतिगुर पूरे नक्क नकेल किसे ना पाईआ। कोटन कोट हवन पूजा करदे पाठ, जगत समग्री वंड वंडाईआ। कोटन कोट नहौदे तीर्थ अठसाठ, गंगा गोदावरी जमना सुरसती फेरा पाईआ। कोटन कोट साधां

सन्तां विके हाट, साची वस्त किसे हत्थ ना आईआ। कोटन कोट ला ला गद्दीआं महंत बैठे उपर खाट, आत्म खाट ना किसे सुहाईआ। कोटन कोट अलूणे रस रहे चाट, चात्रिक तृखा ना किसे बुझाईआ। कोटन कोट रास मण्डल रचौण कर कर नटूआ नाट, हरि का नाटक दिस ना आईआ। कोटन कोट आपणे अंग रहे काट, अंगीकार ना होया साचा माहीआ। कोटन कोट मुकाई बैठे वाट, जगत ज्ञान रहे दृढ़ाईआ। कोटन कोट मस्तक तिलक लगाइण ललाट, त्रै त्रै रूप वटाईआ। पुरख अबिनाश कलिजुग अन्तम किसे ना दिसे साथ, घर घर ख़ाली टल्ल रहे खड़काईआ। कोटन कोट लभ्भदे फिरन त्रैलोकी नाथ, नाथ अनाथां ना होए सहाईआ। कोटन कोट शरअ शरीअत बद्धे हक़ जनाब, हाज़र हज़ूर हज़रत नूर ना कोए दसाईआ। कोटन कोट मुख रक्ख नकाब, निउँ निउँ सयदे रहे कराईआ। कोटन कोट छड्ड छड्ड भज्जे आप, विच्च थलां आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, कलिजुग तेरी अन्तम वार, बिन आपणी किरपा मेल ना किसे मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दिता साचा दान, हरि मन्दर बैठ काया मकान, राती सुत्यां दरस दिखाईआ। (३ पोह २०१६ बि)

नौं नौं चार चौकड़ी कलिजुग उतरे पार, हरि साचा सच जणाइंदा। कोटन कोट राम लए अवतार, कोटन कोट कृष्न नाच नचाइंदा। कोटन कोट सखीआं मंगलाचार, कोटन कोट मण्डल रास रचाइंदा। कोटन कोट ईसा मूसा करन पुकार, कोटन कोट मुहम्मद अद्ध विचकारे राह तकाइंदा। कोटन कोट भगत भगवन्त सन्त राह तक्कण मीत मुरार, कोटन कोट गुरसिख एका ज्ञान दृढ़ांइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे एका वर, आपणा परदा आप लाहिंदा। (६ माघ २०१७ बि)

आपणा भेव आप खुल्हाइंदा, पारब्रह्म सच्चा शहनशाह। ईसा मूसा नूरी जलवा आप जगाइंदा, आपे पर्दा लए उठा। आपे काया काअबा वेख वखाइंदा, दो दो आबा मेल मिला। आबे हयात आप प्याइंदा, सच सुराही हत्थ उठा। सच भूप साचे तख्त नज़री आइंदा, शाहां सिर सच्चा शाह। अञ्जील कुरानां आपे गाइंदा, आपे संग मुहम्मद चार यार मेला लए मिला। आपे ऐनलहक सलोक सुणाइंदा, आपे प्रगट होए बेऐब परवरदिगार ख़ुदा। आपे ख़ालक ख़लक रूप धराइंदा, आपे मुशक्त आपणे सिर लए उठा। आपे निरगुण सरगुण डंक वजाइंदा, शब्द अनादी नाद सुणा। आपे पंज तत्त काया चोला वेख वखाइंदा, नानक नाउँ गाया इक्क निरँकार उच्ची कूक कूक अला। आपे गोबिन्द गढ़ सुहाइंदा, सुत दुलारा वेस वटा। चार जुग इक्क चौकड़ी आपे बंधन पाइंदा, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा दए भवा। कोटन कोट आपणा रूप राम कृष्न आपणा खेल खलाइंदा, जोती जोत जोत जाए समा। कोटन ईसा मूसा संग मुहम्मद अद्धविचकारे राह तकाइंदा, हेठ मुस्सला बैठे वछा। कोटन कोट नानक गोबिन्द हरि हरि गाइंदा, सचखण्ड दवार राह तका। विष्न ब्रह्मा शिव साची सेव कमाइंदा, लख चुरासी वेखे थाउँ थां। कोई घड़े कोई भन्ने कोई मुख छुपाइंदा, कोई प्रगट हो हो लोकमात फेरा पा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव दित्ता एका वर, आपणा नाम दृढ़ा। (२३ माघ २०१७ बि)

**कुआर कंनया** : वेद व्यास दित्ती दात, दाता दया कमाईआ । भेव खुल्ह़ाया लोकमात, माण दिवाया कलम शाहीआ। प्रगट होए पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। निरगुण जोत धुर दी मात, पिता मात इक्को रंग समाईआ। कवार कंनया उस नूं गिआ आख, जिस दा कन्त बिनां बेअन्त नज़र किसे ना आईआ । सच दवारे रक्खे वास, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। जिस सम्बल इक्को दीपक जोत प्रकाश, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। सच समग्री धुर दी रास, पारब्रह्म प्रभ आप टिकाईआ। खेले खेल पुरख समराथ, महिमां अकथ्थ आप जणाईआ। जिस दा लेख अलेख किसे ना आवे हाथ, अन्त कह ना कोई समझाईआ। शब्द इशारा जगत भविख्त वाक, भाखिआ भाशा विच्च दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, सति सतिवादी सद वडयाईआ। (५ चेत २०२१ बि)

**कुकर्म** : जगत भुलेखा भरम दा, गुरसिख भुल्ल ना जाणा। एह वेला सच्चे कर्म दा, नहीं कुकर्म कमाणा । (१३ चेत २००८ बि)
कलिजुग जीव होए कुकर्मी। विरला दिसे कोई साचा धर्मी। (२४ चेत २००८ बि) जन्म गवाया कुकर्म विच, इक्क रक्खी ना प्रभ की टेक। (११ विसाख २००८ बि) (नीच कर्म)

**कुकड़** : हरि जू पढ़े बिन काग़ज़ पेपर शाही इंक, अक्खर आपणा आप प्रगटाइंदा। गुरमुखां कहे थैंकयू थैंक, थेटर आपणा आप वखाइंदा। चिट्टे काले जो करदा रिहा पेंट, वाईट बलैक आल राईट कह सुणाइंदा। किसे हेअर फ़ेस लौण ना देवे सैंट, ख़ाकी ख़ाक सर्ब रुलाइंदा। हुक्म हाकम देवे सैंट, सादर आपणा हुक्म मनाइंदा। अन्तम सभ दा करे अैंड, इनडैकस आपणे हत्थ रखवाइंदा । मुरग़ीख़ाना बणा विच्च रखवाए काक हैंन, ऐग सभ दे भन्न वखाइंदा । लेखा जाणे शी ही मैंन, मैन आपणा भेव खुल्ह़ाइंदा। दी दोज़ दैंन, दैट आपणा परदा लाहिंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां वखाए इक्क घर, लड़ी लड़ी नाल गंढाइंदा । (१६ मध्घर २०१६ बि)
**कुचील** : तूं बस्त्र पहिरे नील, बसन बनवारी आपणा वेस वटाईआ । सृष्ट सबाई होई कुचील, कुचल देवीं थाउँ थाईंआ। (२० माघ २०१६ बि)
मैं कोझी कमली होई कच्ची, कुचील आपणा आप नज़री आईआ। क्यों मेरी उम्मत ना रही सच्ची, भुलया बेपरवाहीआ । (१ फग्गण २०१६ बि)
आत्म ना होए कुचील, जुदा रूप ना कोई वटाईआ । तेरे हुक्म दी होए ताअमील, सिर सके ना कोई उठाईआ। (१ मॅघब २०२१ बि) (मैले वस्त्रीं वाला)

**कुल्ली** : कुक्खी कक्ख हरि हरि मन्दर, हरि साचा आप सुहाइंदा। जगे जोत अंदरे अंदर, दीवा बाती ना कोई वखाइंदा। भाग लगाए डूंघी कंदर, गुर दर मन्दर खोज खुजाइंदा। मन मन्दर भवे ना बन्दर, दह दिशा वेख वखाइंदा। बज़र कपाटी तोड़े जंदर, नाम कटारा इक्क लगाइंदा। कलिजुग लेखा चुक्के खण्डर, सच मुनारे आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाइंदा।

वड वड्डिआई गुरसिख भाग, हरि सतिगुर सेव कमाइंदा। दीपक जगे जोत चिराग, घर नूर नुराना डगमगाइंदा। त्रैगुण माया बुज्झे आग, पंज तत्त आप बुझाइंदा। हरि हरि पत्तित पुनीता बणया सज्जण साक, जगत नाता तोड़ तुड़ाइंदा। पत्तित पुनीत करे पाकी पाक, साचा साकी जाम प्याइंदा। बन्द किवाड़ा खोल्हे ताक, निझ नेत्र आप खुल्हाइंदा। शब्द घोड़े चढ़ाए राक, हरि शब्द लोआं पुरीआं आप फिराइंदा। नाता तोड़े अठ्ठ तात, मन मत बुद्ध ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। (३ माघ २०१७ बि)

कुल्ली कक्ख घर सुहञ्जणा, सो पुरख निरञ्जण आप सुहाइंदा। देवे वड्डिआई आदि निरञ्जणा, दूसर संग ना कोई वखाइंदा। दर घर आया दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराइंदा। धूड़ कराए एका मज़ना, मस्तक टिक्का नाम लगाइंदा। आदि अन्त परदा कज्जणा, सिर समरथ हत्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा।

कुल्ली कक्ख गहर गम्भीरा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। कट्टणहारा जगत ज़ंजीरा, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। अमृत बख्शे ठांडा सीरा, सांतक सति सति वरताईआ। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीरा, जोग अभिआस ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए तराईआ। (३ माघ २०१७ बि)

कुल्ली कक्ख सोहणा मन्दर, मन वाशना नज़र ना आईआ। गृह वस्सया हरि जू अंदर, घर बैठा आसण लाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी दिसे खण्डर, गुरसिख तेरा खेड़ा रिहा वसाईआ। कोई ना चढ़े उच्ची मंज़ल, मंज़ल मकसूद हत्थ किसे ना आईआ। सारे राह विच्च हो के गए बेदल, सतपत हत्थ ना कोई रखाईआ। सूफ़ी फ़कीर गा गा गए गज़ल, नग़मा नाम सुणाईआ। अन्तम सभ दे सिर ते आई अज़ल, अज़र कोई रहण ना पाईआ। लालो तेरे उत्ते कीता फ़ज़ल, रहमत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बाडी बाडीआं नाल रलाईआ ।

सोहे कुल्ली जिथ्थे वरसे नूर, सो धाम सोभावन्त। गुरमुख आत्मा तेरी भरपूर, घर मिल्या सच्चा कन्त। जिस नूं लभ्भदे दूर, सो नेड़े आया अन्त । अठ्ठे पहर हाज़र हज़ूर, घर मेला नारी कन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को कुल्ली वेखे सोभावन्त।

गुरमुख कुल्ली कक्ख कक्ख करे पुकार, तिनका तिनका दए दुहाईआ। मेरी रक्ख पत विच्च संसार, मैं तेरी ओट तकाईआ। मैं तेरे गुरसिखां दा पर्दा बैठी ढ़क, तूं मेरी लाज रखाईआ। मेरी कोई हार ना कोई जित्त, चार दीवार ना बणत बणाईआ। मेरे वेंहदिआं मन्दर जाए ढठ्ठ, उच्चे टिल्ले नज़र किते ना आईआ। लालो तेरा खेड़ा जाणा वस, सतिजुग साचे वज्जे वधाईआ। क्यों श्री भगवान गिआ दस्स, ना कोई मेटे ना मेट मिटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस कुल्ली अंदर गिआ वस, सो कुल्ली सोभा पाईआ। (१३ मध्घर २०१८)

नंदू कुल्ली सोहणा सवाद, ब्रह्मण्ड वज्जे वधाईआ। पीरा फ़कीरा करन याद, प्रभ दुखड़े दे मिटाईआ। ग़रीब निवाज़ दिसें आदि, जुगादि तेरी सरनाईआ। निहकर्मी कर्म कांड दित्ता साज, साजन साची जगत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म मरन दुख लाहीआ।

नंदू कुल्ली इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द दरसाइंदा। जिस गृह दीपक चढ़े चन्द, सो मन्दर सोभा पाइंदा। एथ्थे ओथ्थे ख़ाना मुकया बन्दी बन्द, बन्दना कीती लेखे लाइंदा। राए धर्म ना देवे डण्ड, डंका इक्को नाम वजाइंदा। चरन प्रीती जाए हंढु, लग्गी तोड़ निभाइंदा। लहणा चुक्के जेरज अंड, उत्भुज सेतज पन्ध मुकाइंदा। दुखीआं अंदर प्रेमी चन्द, सुखीआं हरि नज़र ना आइंदा। दीन दयाल सदा बख्शंद, बख्शश आत्म नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाइंदा।

नंदू कुल्ली सच झरोखा, हरि ताकी खोलु वखाईआ। प्रभ नूं मिल्या सच्चा मौका, घर ग़रीब निमाणयां फेरा पाईआ। अग्गे जन्म मरन ना देवे धोखा, धूआं धुखदा दए बुझाईआ। आत्म परमात्म मार्ग सौखा, सोहणा राह वखाईआ। भाग लगाए साचे कोटा, किला बंक वडयाईआ। चरन सरनाई साची ओटा, गत मित इक्क जणाईआ । लेखे लगे पुत्त नाल पोता, पोतरे आपणी गोद बहाईआ। कर्म कांड दा पूरा होया जोता, वड किरसाणा आपणा हल्ल चलाईआ। सोहणा फुल्लया मात पौदा, फल लाए बेपरवाही। भगतां विच्च मिल्या हुदा, प्रभ इक्को रंग वखाईआ। एथ्थे ओथ्थे होए ना जुदा, निरगुण सरगुण गंढु पवाईआ। खुशी मनाए धरत बसुधा, धरनी रही जस गाईआ। जिस घर टुक्कर होवे रुक्खा, तिस घर पुरख अबिनाशी आपणा फेरा पाईआ। आदि जुगादि प्रेम प्रीत दा सदा भुक्खा, वड्डा छोटा ना कोई जणाईआ। जन्म कर्म दा मनावे रुठ्ठा, रुठ्ठठआं आपणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वडयाईआ।

नंदू कुल्ली करे हासा, बत्ती दन्द रही वखाईआ। वेखो सईओ प्रभ तमाशा, तमाशबीन फेरा पाईआ। जिस दा दस्स सके ना कोई खुलासा, सो आपणी ख़सलत रिहा जणाईआ। जिस दा करदे जोग अभिआसा, नंद चन्द नज़र किसे ना आईआ। पढ़ पढ़ थक्के पूजा पाठा, दिवस रैण रसना जिह्वा होई हलकाईआ। सो साहिब पुरख समराथा, दर साचे डेरा लाईआ। भय विच्च आया डरदा नाठा, जन भगतां सेव कमाईआ। फ़रीद कहे मैं खाया काठा, दुक्ख भुक्ख ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाईआ ।

नंदू कहे मैं नहीं मन्नदा, की तेरी वडयाईआ। जिंनां चिर दुक्ख निकले ना मेरे चन्न दा, सुख घर ना मिले सहज सुभाईआ। खाणा पीणा लेखा अन्न दा, जगत विहारा कार कमाईआ। लक्ख चुरासी जम ना डंन दा, डंका होर ना कोई सुणाईआ। लेखा चुके तन मन दा, मन मनसा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाईआ।

कुल्ली कहे सुण नंदू, सच सच जणाईआ। घर आया दीनां बंधू, बंधन सारे दए मुकाईआ। ढोला गा साचा छन्दू, शहनशाह रिहा समझाईआ। पुत्त पोत्रयां टॅट्टी गंढू, गंढु आपणे नाल पवाईआ । प्रेम प्रीती तोड़ हंढू, अद्धविचकार ना कोई तुड़ाईआ। दीन दयाल सदा बख्शंदू,

बख्शश आपणी रिहा कमाईआ। जो इस दे विच्च आया पंजू, पंजे वाले नाल मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, श्री भगवान बेपरवाहीआ। धरनी कहे मोहे चढ़या चाउ, धरत धवल वज्जी वधाईआ। घर आया बेपरवाहो, मेहरवान फेरा पाईआ। नित नवित्त दरसन पाओ, दरस दीदार इक्क जणाईआ। जन्म कर्म दी हरस मिटाओ, हवस कोई रहण ना पाईआ। साची फर्श बल बल जाओ, जिस उपर चरन छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वडयाईआ।

खुशी हो के कहे खाट, खटका कोई रहण ना पाईआ। मेरा प्रेम विछोणा गिआ पाट, ओढुण नज़र कोई ना आईआ। प्रभ पत्तण मल्लया एका घाट, घर हरिजन डेरा लाईआ। जिथ्थे कोई ना रहे वाट, पान्धी पन्ध ना कोई रखवाईआ। नाता तुट जाए सज्जण साक, सज्जण इक्को इक्क नज़री आईआ। मिले वड्डिआई सच्ची ख़ाक, जो ख़ाक चरन धूढ़ी नाल मिलाईआ। ग़रीब निमाणयां प्रभ नूं रैहम करन दी दस्सी जाच, पाथर रूप ना कोई दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल कराईआ।

खाट उत्ते हस्से चादर, चाउ घनेरा इक्क जणाईआ। धन्न भाग मोहे मिल्या आदर, प्रभ बैठा सेज सुहाईआ। ग़रीब निमाणयां वणज कराए बण सौदागर, वस्त अमोलक आप वरताईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, उजरत कीमत ना कोई रखवाईआ। पार किनारा डूंघे सागर, दर साचा इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ।

चादर नाल हस्से लेफ़ निहाली, आपणी खुशी मनाईआ। मिल्या मेल जोत अकाली, अकल कल धारी फेरा पाईआ। लेखे लग्गी घाल घाली, घालणा पूरी दए कराईआ। चल के आया धुर दा माली, मालक सच्चा बेपरवाहीआ। आप रक्खे हत्थां ख़ाली, जन भगतां झोली रिहा भराईआ। निरगुण हो के करे दलाली, सरगुण साचा वणज वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

खाट अंदर नच्चे वाण, ताल ताल नाल वजाइंदा। वेखो चल आया भगवान, जन भगत दवारे फेरा पाइंदा। जिहनूं लभ्भदा रिहा काहन, सो काहन वेस वटाइंदा। साचा मन्दर इक्क मकान, नंदू कुल्ली डेरा लाइंदा। ना बिरध ना जवान, ना नढ्ढा ना अञाण, रूप रंग रेख नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल आप कराइंदा।

वाण नाल हस्से दौण, दौड़ी दौड़ी खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी दित्ती ठंडी पौण, सुख सागर विच्च समाईआ। मेरी प्रेम नाल नीवीं धौण, निउँ सजदा सीस झुकाईआ। बिनां गोसाईं वात पुच्छे कौण, साची सार कोई ना पाईआ। साड्डे उत्ते आया सौण, सोहणी आपणी रुत्त सुहाईआ। जन भगतां ढोला आया गौण, गोबिन्द आपणा वेस वटाईआ। करे खेल इक्क अनहोण, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सद वडयाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद मेहरवान, मेरी तेरी तेरी मेरी तऱा तऱा समझाईआ। (१४ जेठ २०२० बिक्रमी नंदू दे गृह)

नंदू तेरी ग़रीबी विच्च सुख, प्रेम बैठा रूप वटाईआ। तेरी कुल्ली विच्च भुक्ख, प्रभ दा ध्यान लगाईआ। तेरी जुली नेत्र रही चुक्क, लोचण रही उठाईआ। तेरा प्रेम प्यार गलवकड़ी पाए घुट्ट, नाता तोड़ जगत लोकाईआ। जींवदिआं तेरी चुरासी गई छुट्ट, जन्म मरन दा झगड़ा दित्ता मुकाईआ। अग्गे एसे तरा गोदी लै जाए चुक्क, घर आ के पैहलों दरस दिखाईआ। जे कोई आंढ्ढी गवांढ्ढी लए पुच्छ, साख्यात नज़री औंदा देणा समझाईआ। मैं पिता तूं मेरा पुत्त, तेरे पुत्त पोतरे रूप वटाईआ। सोहणा दर्शन करना घर बैठयां चुप्प, राती सुत्यां होए सहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुखीआं विच्चों तेरा कट्ट के जावे दुःख, दलिद्दर आपणी झोली पाईआ। (१८ जेठ २०२१ बि)

लछमण कुल्ली कहे मेरे वेखो लच्छण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। साहिब सतिगुर मेरी पत्त आया रक्खण, मेहर नज़र उठाईआ। हरि संगत नाल मिलाई वरोल मक्खण, छाछ रूप ना कोई वखाईआ । मेरे अंग अंग लग्गे फरकण, मेरी सुरती लए अंगढ़ाईआ। जन्म जन्म दी मेरी मिटे धड़कण, दुःख दर्द रहे ना राईआ। गुरमुख वेख मेरे नैण लग्गे मटकण, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। मेरे विकार लग्गे झटकण, भज्जण वाहो दाहीआ। प्रेम प्रीत नगारे लग्गे खड़कण, हरिजन ढोले सच्चे गाईआ। गुरसिख साचे लग्गे कड़कण, बोल बुलारा इक्को इक्क जणाईआ। मेरी पिछली मिटे मुड़तन, बल आपणा दए जणाईआ। अगली पिछली मिटी हरसन, हरस रही ना राईआ। अमृत मेघ लग्गा बरसन, मेहर नज़र उठाईआ । खोटे खरे लग्गा परखण, सच कसवटी हत्थ उठाईआ। काया भाण्डे माटी पोचे बर्तन, निरगुण सरगुण साफ़ कराईआ। मेरे विच्च रहे ना कोई अड़चन, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

लछमण कुल्ली वेख वेख नच्चे, नाच आपणा रही वखाईआ। मैं गुरमुख गुरसिख वेखे सच्चे, सच सच जिनां मिली वडयाईआ। पारब्रह्म दे साचे बच्चे, चल के आए वाहो दाहीआ। मैनूं कोझी कमली नूं एहो लग्गे अच्छे, अच्छी तरां समझाईआ। मेरे लूं लूं अंदर रचे, रचना आपणी रहे वखाईआ। हुण नहीं दिसदे कच्चे, गोबिन्द इक्को वार पकाईआ। पिच्छे मैनूं वी पैंदे रहे धक्के, हुण धक्का ना कोई लगाईआ। हरि संगत मिल्या मेल भैण भाई सके, सतिगुर नाता आप जुड़ाईआ। कलिजुग जीव रहण हक़े बक्के, हरि का भेव कोई ना पाईआ। श्री भगवान शाह सुल्तान जिस वेले मेरे वल तक्के, मेरे नैण नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहमत इक्को इक्क कमाईआ।

लछमण कुल्ली कहे मैनूं आवे हासा, हस्सदिआं चैन ज़रा ना आईआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण जाण तमाशा, सो तमाशा आपणा रिहा वखाईआ। भुल्ली भटकी नूं दर आ के दए दिलासा, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। प्रभ चरन चरन रक्ख भरवासा, तेरा भरम दए गवाईआ। तेरा ख़ाली रहे ना कासा, वस्त अमोलक विच्च टिकाईआ। करवट लै के बदलया पासा, पासा तेरा दए उलटाईआ। जुग जुग दी पूरी करे आसा, आसा आसा विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ। लछमण कुल्ली अक्ख खोल्हे, चोरी चोरी नैण उठाईआ। कवण कूटे मेरा हरि जू बोले, आपणा राग सुणाईआ। हरि संगत जिस दे वसे कोले, दूर दुराडे आपणे अंग रखाईआ।

मैं वेख्या उह सारे भोले भाले, जिन्नां दी धन्ना सेव कमाईआ। सभ दे लेखे लाए पंज तत्त काया चोले, जिन्नां आपणा रंग रंगाईआ। मैं वी चढ़ना ओसे डोले, जिस डोले विच्च मेरा लछमण वसे सच्चा माहीआ। मेरा पर्दा कोई ना फोले, मेरा घुंगट ना कोई उठाया। मैं सुणदी रही साधां सन्तां दे रौले, चारों कुण्ट देण दुहाईआ। जिंनां चिर प्रभ मेरा मेरे नाल ना बोले, मेरी शांत ना कोई कराईआ । धन्न भाग मेरा कुण्डा आ के खोल्हे, खिड़की बन्द रहण ना पाईआ। प्रेम प्यार दे दए झकोले, हुलारा आपणा नाम लगाईआ। गुरमुख गौण सोहँ ढोले, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दए चुकाईआ।

लछमण कुल्ली उच्ची चढ़, नेत्र नैण उठाया। कवण मेरा राग रिहा पढ़, पढ़ पढ़ जगत सुणाया। नेत्र वेख डिग्गी दड़, होश रही ना राया। साहिब सुल्तान सिफ्तां रिहा कर, जिस दा ना सीस ना धड़, नाम ढोला इक्को गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा रिहा चुकाया।

लछमण कुल्ली कहे मैं गुंदा सीस, हार शिंगार लगाईआ। मैनूं वेखे मेरा जगदीश, वल मेरे ध्यान लगाईआ। मैं आंढीआं गवांढीआं कहां मेरी कोई ना करे रीस, मैनूं इक्को मिल्या सच्चा माहीआ। जिस दे दुआरे कोई ना लग्गे फ़ीस, फ़ैसला इक्को वार सुणाईआ। कर किरपा देवे नाम हदीस, साहिब होर रहे ना राईआ। मेहरवान हो के देवे असीस, असलीअत आपणी दए समझाईआ। किरपा कर जिस दुआर चरन टिकाए विच्च सम्मत बीस, लोकमात विच्चों बिस्त्रे चुक्क के सचखण्ड दए लगाईआ। मैनूं एहो वस्त चाहीदी ठीक, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। नित नवित्त राह तक्क के रही उडीक, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। सो वेला आया प्रभ भुगतण आया तरीक, गवाह गुर चेले नाल मिलाईआ। जिस दा दिसे ना कोई शरीक, मेरी शरकत दए गवाईआ। मैं कोझी कमली की करां ताअरीफ़, जिस तुआरफ़ आपणा दित्ता कराईआ। इक्को मंग मेरी लग्गी निभ जाए प्रीत, प्रीतीवान तेरे हत्थ वडयाईआ। मेरे विच्च इक्को निक्की जेही झीत, जिस विच्चों हरि जू नज़री आईआ। दे दरस करे ठंडी सीत, सीतल धार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरे सुत्ते भाग जगाईआ। नीं सईओ मेरे जागे भाग, वडभागी घर आया। मेरे अन्धेरे जगाए चिराग, तेल बाती ना कोई रखाया। मेरे पापण दे धोवे दाग़, दुरमत मैल रहे ना राया। घर मेले कन्त सुहाग, खुशी इक्को वार जणाया। दिवस रैण रहे वैराग, मेरी चले ना कोई चतुराया। जिस वेले मेरी खुल्हे जाग, चारों कुण्ट हरि जू नज़री आया। मैं वेख खुशी होई आज, अचनचेत आपणा खेल खलाया। जिस दी हरिसंगत बणी समाज, सोहणा रंग वखाया । फड़ के बदो बदी मेरा पर्दा दित्ता उठाल, प्रभ आपणा सगन मनाया । मैनूं सुत्ती नूं मार आवाज़, बौहड़ी आपणा हुक्म सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लछमण कुल्ली वेख अनमुली, कीमत आपे रिहा चुकाया।

एह कुल्ली कहे ओ महींवाल, सोहणी तेरा ध्यान लगाईआ। नैं दी झल्ले ना कोई झाल, धार वहण रिहा वहाईआ। इक्क आर इक्क पार दोहां ना मिले कोई सहार, रोवण मारन धाहींआ। यार नालों विछड़या यार, यारी यार तोड़ ना कोई निभाईआ। कच्चा घड़ा संग ना चल्लया घुमयार, घुंमण घेरा पाईआ। ओस वेले सोहणी करी पुकार, बिन खुदावंद बेड़ा

पार ना कोई कराईआ । कक्खां कुल्ली दे गई हार, जिस दा नित नित ध्यान रखाईआ। ओ साहिब परवरदिगार, तेरे हत्थ वडयाईआ। फेर मेलीं विच्च संसार, एह सर बूटे कमाद काने रूप वटाईआ। एह हलट चले संसार, जल धारा रूप वटाईआ। एह जिनां दा सच्चा प्यार, साहिब सतिगुर दए वडयाईआ। खेल करे आप निरँकार, झुग्गी तेरा लहणा दए उतार, हरि का प्रेम सोहणी धार, महींवाल लछमण नज़री आईआ। (२५ चेत २०२० बिक्रमी लछमण सिँघ दे खूह)

कुल्ली कहे मैं गुरमुख खेड़ा, जिस गृह हरि जू नज़री आइंदा। जिस दा वड्डा सोहणा वेहड़ा, गुलशन रूप वटाइंदा। प्रेम प्रीती पाया घेरा, खुशीआं नाच नचाइंदा। मैं वेखां गुरमुख केहड़ा केहड़ा, जो मेरे अंदर बह बह रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मेरा वेख वखाइंदा।

कुल्ली कहे मैं गुरमुख नगर, नगरी हरि जू आप वसाईआ। पूरी कीती मेरी सधर, घर सज्जण फेरा पाईआ। मैं किते ना जावां लभ्भण, जंगल जूह ना खोज खुजाईआ। मेरी पत आया रक्खण, बेपरवाह जगत गोसाईंआ। सच्चा मार्ग अगम्मी आया दस्सण, रहबर बण के नूर इल्लाहीआ। मेरे अंदर आया वसण, घर साचा इक्क सुहाईआ। मेरे दुःखड़े आया कट्टण, सुख सागर विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ।

कुल्ली कहे मेरा भाग चंगा, भागाँ भरी खुशी मनाईआ। जिस दवारे साहिब लँघा, कदम कदम पन्ध मुकाईआ। गुरमुख गुरसिख नाल सजा, सोहणी बणत बणाईआ। प्रेम प्रीती अंदर मधा, मधुर धुन राग सुणाईआ। जिस ने आ के पर्दा कज्जा, सदा सदा होए सहाईआ। मैं मन्नां उहदी सद रज़ा, भाणे विच्च समाईआ। सच पुछो प्रभ नूं मिल के आया उह मज़ा, जिस दा रस सके ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे ग़रीबणी दए वडयाईआ। कुल्ली कहे मेरा सोहया बंक, घर वज्जी नाम वधाईआ। प्रभ ठाकर मिल्या धुर दा कन्त, सेज सुहञ्जणी रिहा सुहाईआ। मैं मिल सखीआं गीत गावां मंत, धुर दा राग अलाईआ। जिस मेरी बणाई बणत, तिस दे निउँ निउँ लागाँ पाईआ। धन्न वड्डिआई दर आई संगत, जे मेरे अंदर वड़ के हरि सतिगुर दर्शन पाईआ। ओनां चढ़े उह रंगत, जेहड़ी बहार मेरे उत्ते सुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं सुख दाता दीनां बंधप, बंधन सारे रिहा कटाईआ। (१४ माघ २०२० बिक्रमी खेड़ा सिँघ)

गुरमुख कुल्ली कहे मेरे जागे भाग, हरि भगत मिले वडयाईआ। घर ठाकर पाया स्वामी कन्त सुहाग, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ । दुरमत मैल धो के दाग़, अमृत आत्म जाम प्याईआ। उपजा के जावे इक्क वैराग, गुरचरन प्रीती सच इक्क दृढ़ाईआ। बुझा के जावे कूड़ी तृष्ना आग, माया ममता मोह गवाईआ। नाम निधान जणा के जाए नाद, धुन आत्मक राग अलाईआ। सोई सुरत उठाए मार आवाज़, कूड़ी क्रिया पर्दा लाहीआ। भेव खोल के दस्से राज़, वरन बरन डेरा ढाईआ । माणस जन्म रक्खे लाज, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सुहञ्जणे दए वडयाईआ।

भगत कुल्ली कहे मैं गावां खुशीआं ढोला, प्रभ दा नाम ध्याईआ। गुर शब्दी बणया इक्क विचोला, जो विछड़यां लए मिलाईआ। साचा नाम सुणाए सोहला, गुफ्त शनीद भेव खुल्हाईआ। मन मनुआ ना पावे रौला, चंचल मति दए गवाईआ। भेव चुका के पर्दा उहला, साख्यात आपणा दरस दए वखाईआ। उल्टा कर के नाभ कँवला, अमृत झिरना दए झिराईआ। मेहरवान हो के पार कराए बिन अमलां, निहकर्मी हो के कर्मा दा डेरा ढाईआ। सच दवारे दस्से मरना, मर जीवत रूप वटाईआ। साची तरनी दस्से तरना, भवजल पार लंघाईआ। निज नेत्र खोल्ह के हरना फरना, जोती दरस नूर इल्लाहीआ। साची मंज़ल दस्से चढ़ना, जगत वासना पन्ध मुकाईआ। इक्को नाम दस्से पढ़ना, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दए वडयाईआ।

कुल्ली कहे मैं वेख के होई निहाल, खुशीआं विच्च समाईआ। जिस नूं कहन्दे दीन दयाल, ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां गल लगाईआ। कुल्ली कक्ख बणा के धुर दी धर्मसाल, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी बैठा सोभा पाईआ। दीनां नाथां पुछणहारा हाल, मेहर नज़र बेनज़ीर इक्क उठाईआ। लेखे लाए जन्म जन्म दी कीती घाल, पूरब लहणा झोली पाईआ। सच प्रीती जोड़े नाल, नालिश कूड़ी दए गवाईआ । नाता तोड़ के अन्तम काल, कलमा इक्को दए समझाईआ। नाम भंडारा दे सच्चा धनमाल, धुर दे धनी दए बणाईआ। गुरमुख कोई कदे ना होवे कंगाल, शाह पातशाह शहनशाह देवणहार वडयाईआ। कुल्ली कहे मैं पिछला की देवां अहिवाल, नेत्र पेख खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

कुल्ली कहे मेरा जागया कर्म, निहकर्मी दया कमाईआ। मेरा मिटाया भरम, भाण्डा कूड़ तुड़ाईआ। लहणा चुकाया वरन बरन, शत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म दे के सरन, सरनगत दित्ती समझाईआ। सन्त सुहेले आया फड़न, लक्ख चुरासी विच्चों वेख वखाईआ। धुर दी करनी आया करन, करता पुरख वेस वटाईआ। जिस दवारे छुहाए चरन, चरनोधक अमृत जाम प्याईआ। उह गुरमुख जीवण तों पैहलां मरन, मरन तों बाद जीवन लैण बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे दए वडयाईआ ।

कक्खां कुल्ली कहे मेरी निमस्कार, नमस्ते कह के सीस निवाईआ। धुर दा मालक परवरदिगार, बेपरवाह तेरी वडयाईआ। आदि जुगादि तूं भगतां दा ख़िदमतगार, गुरमुखां दी सेव कमाईआ। जगत वकारां वस्सया बाहर, प्रेम प्यार अंदर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाईआ।

गुरमुख कुल्ली कहे मेरा आपा गिआ झुक, हंगता रहण कोई ना पाईआ ।
मेरा पैंडा गिआ मुक, मंज़ल मिली बेपरवाहीआ। जो भगत उधारे आपणे सुत, सति सतिवादी जोड़ जुड़ाईआ। सो मेरी मौले आण के रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। मैं वेख के होई खुश, ग़मी दित्ती तजाईआ। जो बख्शणहारा सच सुच, सति सतिवाद इक्को रिहा दरसाईआ। मेरे गृह गिआ पुज, आपणा पन्ध मुकाईआ । निर्मल कर के जाए विच्चों बुद्धि, मनसा मन ममता मोह मिटाईआ । दे के जावे साची सुध, सिध्धा मार्ग इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वडयाईआ।

गुरमुख कुल्ली कहे मेरा पूरा होया लेखवा, लेखणी लिख ना सके राईआ। अंदर रिहा ना कोई भुलेखवा, भाण्डा भरम भन्नाईआ। जुग चौकड़ी श्री भगवान भगतां नाल खेले खेडां, सतिजुग त्रेता द्वापर दए गवाहीआ। जेहड़ा किसे हत्थ ना आवे विच्चों वेदां, मन्दरां विच्च मेल ना कोई मिलाईआ। उह स्वामी अछल अछेदा, घर घर बैठा डेरा लाईआ। कर प्रेम प्यार जिनूं बख्शे आपणे भेता, अभेव दए खुलाईआ। घर जणा के साचा देसा, पर्दा उहला दए उठाईआ। दयावान हो के गृह मेरा आप पेखवा, सच मन्दर वज्जी वधाईआ। प्रेम प्यार दी देवे भेटा, भजन बन्दगी नाम निधाना इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा वेला वक्त सुहाईआ ।

कुल्ली कहे मेरी पूरी होई कामना, तृष्ना रही ना राईआ। धुर दा ठाकर बणया ज़ामना, जमां तों लए छुडाईआ। मेल मिलावे साचे रामना, राम रहीम जोड़ जुड़ाईआ। भाग लगा के साचे खेड़े गरामना, गृह मन्दर वेख वखाईआ। कूड़ी मेट के तृष्ना तामना, प्रेम प्रीती इक्क जणाईआ। गुरमुखां दी पूरी करे भावना, भाव आपणा लए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कुल्ली कक्ख कहे मैं ढोला सच्चा गावणा, जिस गाविआं मिले बेपरवाहीआ। (५ भादरों श सं १ केसर सिँघ दे गृह)

सचखण्ड सच्ची कुल्ली, कुलवन्ता आप बणाईआ। जन भगतां दए आप अणमुली, करता कीमत ना कोई लाईआ। भगत फुलवाड़ी साची फुल्ली, पत्त डाली आप महकाईआ। मंगी दात रसना जिह्वा बुलीं, बत्ती दन्द नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखवा बंधन चन्दन बन्दन नंदन दोहां दए चुकाईआ । (१५ फग्गण २०१६ बि)

**कन्ना :** गुर अवतार पैगम्बर कहण क्यों गोबिन्द लाया कन्ना, डण्डा दस दस धार बदलाईआ। वेख के अन्तम कन्ढ़ा, कलिजुग नैण उठाईआ। प्रभ दा खेल कोई कर ना सके पंजां तत्तां वाला बन्दा, गुर अवतार पैगम्बर ना कोई चतुराईआ। हुण मैं कीता खण्डे नाल जंगा, युद्धां नाल लड़ाईआ। फेर फिरां विच्च ब्रह्मण्डां, शब्दी धार सैहज सुखदाईआ। दो जहानां निरगुण धार बदल के लँघा, पुरी लोअ खोज खुजाईआ। जननी कुक्ख किसे ना जम्मा, रक्त बूंद ना मेल मिलाईआ। पवण स्वास लवां ना दमा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। रसना नाल किसे नूं कहणा नहीं अंमड़ी अंमा, गोदी गोद ना कोई टिकाईआ। दीन मज़हब दा होणा नहीं कोई तमा, तामस तृष्ना देणी गवाईआ। इक्को साहिब दा हुक्म मन्नां, पुरख अकाल इक्क चतुराईआ। मेरा उहदा निरगुण धार सरगुण फरक होवे इक्क कन्ना, मुकता वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ।

गोबिन्द कहे मेरे कन्ने दा भाव आह, आमद विच्च सरनाईआ। मेहरवान मेरे विच्च समा, समग्री आपणी विच्च टिकाईआ। जोती जाता हो के जोत जगा, नूर जहूर कर रुशनाईआ। पुरख अकाल हो के शब्दी नाद वजा, अनरागी राग सुणाईआ। सांझा मन्दर इक्क सुहा, हिस्सा वंड ना कोई वंडाईआ। सच सिँघासण इक्क विछा, सोभनीक इक्क सुहाईआ। सद मिल के आपणा झट्ट लँघा, एका दूआ ना कोई चतुराईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द एह कन्ना तेरा मेरा गवाह, शहादत निरंतर दए भुगताईआ। इस नूं समझ सके कोई ना

राअ, पर्दा परदानशीन ना कोई उठाईआ। गोबिन्द किहा वाह वाह, वाहो वाहो वाहिगुरू तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल फड़ के बांह, बाजू दित्ता हलाईआ। जिस वेले सृष्टी दृष्टी होई कां, काग वांग कुरलाईआ। मात पुत्त इक्क दूजे वल लैण तक्का, भैण भईआ अक्ख बदलाईआ। ओस वेले दोहां ने जाणा आ, धुर दा फेरा पाईआ। एह कन्ना कामल मुशर्द दा सदा सदा गवाह, शहादत शरअ तों बाहर भुगताईआ। दोहां नूं मिल के करनी पए ना कोई दुआ, सयदे विच्च ना सीस निवाईआ। चेला गुरू इक्क रूप हो के दईए वखा, वक्खरा घर ना कोई जणाईआ। शब्द जोत दा इक्को होवे राह, रहबर इक्को नूर इल्लाहीआ। गोबिन्द झट्ट छाती उत्ते हत्थ दित्ता टिका, सीना जोर नाल दबाईआ। वेखीं किते प्रभू ला ना जावीं दाअ, अछल छलधारी आपणी कार कमाईआ। जे दोवें फेर आईए ते सूर गाँ दा झगड़ा दईए मुका, पशूआं उत्ते धर्म ना कोई टिकाईआ। इक्क तेरा इक्क मेरा रह जाए नां, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जेहड़ा साड्डी दोहां दी चरन धूढ़ी लए नहा, जुग जन्म दी दुरमत मैल धवाईआ। पुरख अकाल ने हां विच्च मिलाई हां, हस्स के दित्ता सुणाईआ। ओस वेले आत्मा परमात्मा परमात्मा आत्मा दोहां दा सांझा होणा नां, मेरी इकल्ले दी चले ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करे अगम्म अथाह, अथाह आपणी कार कमाईआ। (१ माघ श सं ५)

सोलां भादरों कहे धुर दा शब्द अगम्मा ढोल, हरि कलमा एका एक दित्ता वजाईआ। सच दवार दा पर्दा खोल्ल, अवतार पैगम्बर गुरूआं दित्ता वखाईआ। उठो वेखो नैण तक्को वस्त रही किसे ना कोल, सति सच बैठा मुख छुपाईआ। झट्ट हज़रत मूसा बिन रसना पया बोल, अनबोलत आवाज़ सुणाईआ। तूं मालक मेरा मेरे विच्च रिहा मौल, दूजा नज़र कोई ना आईआ। आपणे जलवे वाला तक्क अगम्मा कौल, इकरार इक्को नज़री आईआ। ईसा कहे निगाह मार लै उपर धौल, इमान सच ना कोई कमाईआ। मैं बैठा तक्कदा रिहा अडोल, तेरे नूर विच्च समाईआ। तेरी ख़लकत होई अनभोल, अभुल्ल आपणा लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साड्डा लहणा देणा पूरा कर इंसतमबोल, पूरब लेखा रहे ना राईआ।

सोलां भादरों कहे सदी चौधवीं आई मारदी हाकां, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। वेखो खेल उस खुदा का, जो खुद मालक नूर अलाहीआ। जिस दा हज़रत मुहम्मद निक्का जेहा काका, मुहम्मद रसूल नाम वडयाईआ। उह चल आया इतफाका, इतफ़ाकीआ आपणा हुक्म वरताईआ। जिस मेरा शरअ नाल जोड़या नाता, ताउलक दित्ता बणाईआ। जिस नूं हिंदू कहन्दे पुरख बिधाता, मुसलम अल्ला कह के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक्क अखवाईआ।

सदी चौधवीं कहे मैं साहिब दा हुक्म मन्ना, मनसा मन ना कोई रखाईआ। मेरा निशान तारा चन्ना, तुरकीआ दए गवाहीआ। इंसतमबोल हद्द बंनां, मुहम्मद अक्ख गिआ उठाईआ। एह खेल श्री भगवंना, करता करे नूर अलाहीआ। जिस लेखे लाउणा गोबिन्द वाला कन्ना, सुनहरी आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मेला लए मिलाईआ।

पैगम्बर कहण साड्डा इसम इस्लाम , आज़म सीस निवाईआ। सुणया अगम्मा कलाम, कलमा धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं अन्त विगड़या इंतज़ाम, बन्दोबस्त ना कोई रखवाईआ। शरअ शरअ होई गुलाम, शरीअत भेव ना कोई उठाईआ। साचा कलमा ना सके कोई पहचान, बेपहचान होई लोकाईआ। लेखा पूरा करे नौजवान, मर्द मरदाना अगम्म अथाहीआ। जिस गोबिन्द कराया इक्क ध्यान, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जिथ्थे ईसा मूसा मुहम्मद तिन्ने मिल जाण, उहदा पर्दा दिआं चुकाईआ। सदी चौधवीं होवे खेल महान, महिंमा कोई कथ ना सके राईआ। पैगम्बर सारे सुणन कलाम, कलमयां बाहर जणाईआ । उथ्थे लेखे लग्गण तारा चन्द निशान, निशान गोली वाला रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

सदी चौधवीं कहे तक्क ज़िमीं असमान, इसम धुर दा वेख वखवाईआ। मुहम्मद झट्ट बोलया बिनां ज़बान, कलमा इक्क दृढ़ाईआ। की उह नूर अलाही इक्क अमाम, अमलां तों रहित बेपरवाहीआ। जिस गोबिन्द दा कन्ना लेखे लाया आण, जिस दी समझ कोई ना पाईआ। उस नूं झुकदे सूर्या भान, निव निव सीस निवाईआ। उहदा लहणा देणा कुछ लेखा नाल चीन जपान, पूरब पड़दा लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक्क अखवाईआ।

मुहम्मद कहे याकूविस्ता अलबहू मज़नू लमहां याउसते वलहू तामीने ज़वीह अज़ीमे यसूह तकशा मसीह मूज़े मुसाह मुहम्मदे दवा दलवीज़े उज़जूउ मोज़ीना वज़े इंसतमबोल कुजै नुज़े नुखद बिखतो ज़वद चीने ज़लू जलविज़ हा मौज़ूनो वज़िस खूना विज़ा याविल वलज़ज़ली तानूज़ा ममम मादिल वाहुल कोमज़े यसवशी पल अफज़ा हम ज़ालूल ज़ज़म चो वलल अज़हम इवज़ी मूसा मुलाहल ईस ज़हुला मुहम्मद रूसलइला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पर्दा आप उठाईआ।

गोबिन्द कन्ना कहे मैं आया गोबिन्द धार, चौदां सौ तीह दए गवाहीआ । मैं कलिजुग अन्त सभ दी वेखणी बहार, फुल फुलवाड़ी दीन मज़हब कायनात महकाईआ। लेखा तक्कणा हज़रत ईसा मूसा रसूल मुहम्मद यार, यराना यार वाला खोज खुजाईआ। मैं करदा रिहा जिस दी इंतज़ार, आप आपणी अक्ख उठाईआ। कवण वेला सांझा आवे प्रवरदिगार, जलवागर नूर अलाहीआ। जो लेखा लहणा सभ दा पूरा करे उधार, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ।

कन्ना कहे मैं कन्ना कायनात, गोबिन्द धार मिली वडयाईआ। मैनूं लिखया नहीं कानी किसे कागज़ात, बण गए समझ कोई ना पाईआ। गोबिन्द दी उंगल सच दी धार बण दवात, प्रेम रस नाल लिखवाईआ। नाले सुण अगम्मी आवाज़, खुशी लई बणाईआ। पुरख अकाल खोल्लया राज़, राज़क रिज़क रहीम आप दृढ़ाईआ। उह वेख पैगम्बरां दा अगाज़, सदी चौधवीं ध्यान लगाईआ। जिस वेले माण रिहा ना रोज़ा निमाज़, सजदा हक़ ना कोई कराईआ। धर्म रिहा ना किसे समाज, सिँघ सिख नज़र कोई ना आईआ। मन कल्पणा होवे राज, रईअत भज्जे वाहो दाहीआ। उस वेले अवतार पैगम्बर गुरूआं तों मंगाँगा जवाब, जवाब तल्बी करां थाउँ थाईंआ । निरगुण धार आपणी साजणा साज, साजण हो के वेख वखवाईआ। जिथ्थे

हज़रत मुहम्मद ईसा मूसा दी आशा वाली आवाज़, ख्वाहिश तिन्नां मेल मिलाईआ। तेरा उथ्थे हद्द बंना बणावां आप, कन्ना कर्म कांड तों बाहर लगाईआ। जिस नूं सारयां मन्नणा बाप, पिता पुरख अकाल कह के सीस निवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरा जपणा जाप, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ।

गोबिन्द किहा पुरख अकाल मेरी इक्को आसा, आशा दिआं जणाईआ। मैं लेखे लाई गुर तेग बहादर वाली लाशा, सीस धड़ तेरे भेट कराईआ। उस ने अन्तम इक्को रक्खी ख्वाहिशा, उंगली समुंदरां पार उठाईआ। औरंगे टोपी वाले आउँदे जो मेरा देण साथा, सगला संग बणाईआ। खुशी विच्च नाले तेरी गाई गाथा, तुध बिन अन्त होए ना कोई सहाईआ। मेरे मेहरवान मैं तेरा सुत गुरू तेग बहादर दा काका, जगत जन्म देण वाली गुज़री माईआ। पर मैनूं तेरा अगला दिसदा ख़ाका, सोहणा नकशा सोभा पाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं होए अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। तूं सभ दीआं लेखे लावण आएं पेशीनगोईआं वालीआं गाथा, अवतार पैगम्बर गुरूआं लहणा दएं चुकाईआ। मेरा तेरे नाल होवे साथा, जोत शब्द धार मिल के वज्जे वधाईआ। सम्बल होवे वासा, सच स्वामी तेरा रंग रंगाईआ। मैं तेरे चरन कँवल करां अरदासा, बेनन्ती इक्को वार सुणाईआ। मैनूं तेरे उत्ते भरवासा, दूसर ओट ना कोई तकाईआ। मेरे साहिब पुरख अकाल दीन दयाल मैं सदा तेरा मन्ना आखा, तूं मेरा इक्को अक्खर आपणी भेटा लैणा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तैरी सरनाईआ।

पुरख अकाल किहा गोबिन्द तूं दस्स आपणी सलाह, मशवरे नाल जणाईआ। गोबिन्द किहा पैहलों मेरा आप बण गवाह, शहादत इक्क भुगताईआ। पुरख अकाल शब्दी शब्द कीती हां, हां हां विच्च मिलाईआ। गोबिन्द हस्स के ताली दित्ती ला, दो हत्थां ताल बणाईआ । मेरे पुरख अकाल जिस वेले कलिजुग अन्तम जावे आ, आप आपणा फेरा पाईआ। गोबिन्द शब्द बणाउणा मलाह, बेड़ा साचा कंध टिकाईआ। खवाज़ा जिस नूं सीस दए झुका, इन्दर निउँ निउँ लागे पाईंआ। सदी चौधवीं जिस दा तक्के राह, मुहम्मद आशा जोड़ जुड़ाईआ। ईसा जिस दा लया साह, साह साह विच्च समाईआ। हज़रत मूसा जिस नूं किहा खुदा, खुद मालक नूर अलाहीआ। तूं सभ दा स्वामी बेपरवाह, प्रभू तेरे हत्थ वडयाईआ। इक्को बचन मैं दिआं सुणा, निव निव सीस झुकाईआ। मेरा कन्ना गोबिन्द कहे तेग बहादर आशा लंडन विच्च देणा पहुंचा, इंगलिशतान पूरब लहणा झोली पाईआ। फेर सारयां पैगम्बरां दी पूरी करीं दवा, मनज़ूरी आपणा नाम रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखवाईआ।

कन्ना कहे मैं सुणया गोबिन्द शब्द अपार, जो अपरम्पर दित्ता दृढ़ाईआ। मैं हो के बह गया त्यार, त्रैगुण तों बाहर डेरा लाईआ। करदा रिहा इंतज़ार, बिन अक्खां अक्ख खुल्लाईआ। पुच्छदा रिहा वारो वार, हज़रत मुहम्मद मूसा ईसा मुहम्मद रसूल आवाज सुणाईआ। मैनूं करनी करदे रिहो ख़बरदार, बेख़बरी विच्च रहण कोई ना पाईआ। जिस वेले कल कलकी लए अवतार, निहकलंका वेस वटाईआ। अमाम अमामा आवे सच्ची सरकार, शहनशाह

धुरदरगाहीआ। सभ दा लहणा देणा पूरा करे उधार, कज़ा मकरूज़ रहण कोई ना पाईआ। मेरी उस दे चरन कँवल निमस्कार, मैं निव निव लागाँ पाईआ। इंसतमबोल तों जिस वेले होणा बाहर, चलणा चाईं चाईआ। इक्क सौ इक्क मील तारा चन्द झुलाउणा निशान, निशाना सभ दा वेख विखाईआ। कन्ना कहे मैं वी वेखां उस समें दा हाल, हालत मेरी मेरा साहिब लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सारा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

इंसतमबोल कहे मेरी बोली अर्ज़ जुरद जिव नी याकूअस सुच्ची, सच दिआं जणाईआ। मैनूं हज़रत मूसा कोहतूर उतों वेख्या गर्दन कर के उच्ची, आपणी अक्ख उठाईआ। हज़रत ईसा हत्थ लाया मुच्छी, मुच्छां नाल छुहाईआ। जिस वेले गल फ़ासी रस्सी टुट्टी, टुट्टी वेख विखाईआ। मुहम्मद पुकार के बाहर किहा वज़ूद बुत्ती, बुतखानिआं बाहर सुणाईआ। सदी चौधवीं दरोही उम्मत जाणी लुटी, लुटेरा बणे बेपरवाहीआ। धुर फ़रमाण होया चौदां तबक रहे ना लुकी, पर्दा उहला दिआं चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ।

इंसतमबोल कहे मेरा मालक मलविज़ हाह ज़लबू अलवा यकबी नलज़ू ज़ीना असत कूज़े मशिल चशमी नावू तमबेज़ी ताखवतुमा सखमे वहा वनाह ज़ूए वज़ी जाए ज़ऊ यसूह वलज़ मुमबा दड़मफले ज़ावहुला मुसतबी महल्ल महुमबा ज़ाहमलीया कौज़िववहौला लाविल ज़विल ज़ावौदा तूला अलहमबा काज़िल महौ ज़ाविल अलगला लगौ गोबिन्दे तकज़वला नूरे वसहा मारवला जां वलवा ज़ा वलवा नूरे अलाह वी रा। (१६ भादरों शहनशाही सम्मत ८)

सतिगुर शब्द कहे तूं वड्डा चंगा, चंगी तेरी वडयाईआ। मैं ना जाणा तेरा पैंडा लंबा, दूर दुराडे मेरे माहीआ। मैं हुक्म विच्च थर थर कंबा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। तूं ही मेरी मईआ तूं ही मेरी अंमा, अंमड़ी कह के तेरा रस आपणे मुख विच्च पाईआ। ना मैं माटी ना मैं चंमा, चम्म दृष्टी ना कोई वखाईआ। ना कोई मेरा हद्द ना कोई मेरा बंना, हदूद नज़र कोई ना आईआ। मैं इक्को नूर ते इक्को तेरा चन्ना, मैं लाडला सुत तेरा अखवाईआ। मैनूं सच दस्स दे मैं तेरे अग्गे वास्ता पावां क्यों गोबिन्द ने लाया कन्ना, जिस नूं कन्नां वाला सुणन कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर , एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ।

जोत धार किहा सुण वे लाडले सुत्ता , बिनां सुत्तयां दिआं जगाईआ । मैनूं ना कोई पर्दा ना कोई उहला ना कोई लुका, आपणा लेखा दिआं वखाईआ । मेरा आदि अन्त जुगाँ जुगन्त पन्ध कदे ना मुक्का, मुक्कण विच्च कदे ना आईआ। तूं सदा मेरे प्यार दीआं गाउँदे रहणा तुकां, नाम कलमे ढोले गीत संगीत जगत वाले सुणाईआ। सभ ने तैथ्थों मेरीआं करदे रहणा पुच्छां, भेव अभेदा देणा खुलाईआ। पर याद कर लै जिस वेले नूर ज़हूर प्रगट होया विच्च कुछा, कछ मछ सभ दा लेखा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मैं तेरा लाडला उह, उहो नज़री आईआ। जो सभ दे नालों निर्मोह, मुहब्बत तेरे विच्च टिकाईआ। तुध बिन अवर ना दीसा कोअ, कूक कूक सुणाईआ। मेरे अंदर तेरी

किरपा दी लोअ, लोइण दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं जद सुणां ते नाम संदेशा सो, सो पुरख निरञ्जण तेरी बेपरवाहीआ। तूं आपे हँ ब्रह्म हो, लक्ख चुरासी विच्च समाईआ। तूं जद चाहवें मेरी झोली ढोआ देवे मैं दीन दुनी देणा ढोअ, लोकमात माती विच्च वरताईआ। जिस नूं कोई ना सके खोह, लुटेरा नज़र कोई ना आईआ। पर याद कर लै आह लेखा तेरा नवां नमाना जो रूप धर लया छब्बी पोह, प्रगणा किसे नूं समझ विच्च ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

पुरख अकाल कहे मेरे शब्द कुनिंदा गुणी गहिंदा वड मरगिंदा शेर धार अबिनाशी। राज योग धर्म धार दी सार निरँकार जगत खेल बहुभांती। आवत जावत खेल खिलावत निरगुण सरगुण खेल अनूप महांबली बल कमलापाती। देश प्रदेश जहान बेपहचान फिरा नौजवान मर्द मरदान कोई मेरा लेखा जाणे दिवस ना राती। लोक परलोक हट्ट ब्रह्मण्ड खण्ड सभ नूं देवां दाती। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक एका इक्क इक्क अबिनाशी।

सतिगुर शब्द कहे तूं सूरा सर्बग्ग तेरा खेल बहु बिध रंगा, तेरा प्रेम रस अनन्दा, तेरा लेखा ज़िमीं असमानां तारा चन्दा, तूं लेखा जाणे लक्ख चुरासी बन्दा, तूं वसे जेरज अंडा, तेरा नाम निधाना बली बलवाना इक्को डण्डा, डण्डावत सभ दी दए बदलाईआ। इक्क वस्त अमोलक सच दवार एकँकार हरि निरँकार तेरे दर ते मंगा, मांगत हो के झोली डाहीआ। तेरा संदेश नर नरेश बिना लेख मैं नव सत वंडां, भज्जां वाहो दाहीआ। पर मैनूं लेखा याद आ गया गोबिन्द वाला तूं पहुँचआ उस घाट ते उस कन्ढा, जिथ्थे समुंद सागर तेरा राह तकाईआ। जिस नूं सन्त मनी सिँघ नौं दिन रातीं रो रो रो के हत्थ मथ्थे ते रक्ख के कहंदा रिहा एह तेरीआं डाहढीआं वंडां, वंडण वाले तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ।

पुरख अकाल कहे शब्दी आह मेरे मलाह जगत गवाह जुग आंदा सच सदा हक़ खुदा तेरा नग़मा नाम संदेशा पैग़ाम हुक्मे बेनाम इसमे इस्लाम रूहे अज़ाम बुते ख़ाकान अबिनाशी अचुते रैहमान सुते नादान लूए लोअ लुकसे मज़ा गाड ए गाइड नीज़ो अवस कलमा महू बेइसते तमा हमज़ी नहक गोबिन्दे तफक पूरने प्री पज़िज़ते अवी नादे शदाद शब्दे अदा ज़हूरे जवा नूरे चसा कोशे तरसकी पशतहा आर हाखफल महा दस्ता बगलगीर किंगे किंगज़ शाहे नहन बासन जूआ बेकस सरफ हू चाते ज़गा अकाले अकाल अकाल इक्क अखवाईआ। शब्द कहे मेरे मालका मैं की मंगा, मांगत दी आशा की वडयाईआ । मैं किस बिध तेरा दर लँघा, अग्गे हो के सीस निवाईआ। मैं चौहन्दा तेरा नूर नूर दा होवे चन्दा, चन्द चांदना डगमगाईआ। मैं ज़िमीं असमान तेरा की नूर तक्कां बन्दा, कि बन्दगी विच्च तेरी वड वडयाईआ। मैं निगाह मारदा मैनूं ना कोई तीर दिसे ना कमान दिसे ना खड़ग ना दिसे खण्डा, शस्त्र हसत ना कोई उठाईआ। मैनूं इक्क नज़रे नज़ू आउँदा तेरा नूर जिस विच्च खेल दिसे अचंभा, अचरज तेरी बेपरवाहीआ। पर इक्क गल्ल याद जिस वेले चौदां रतन कढ्ढे जो संदेशा दित्ता सी परी अरंबा, गज़ हुक्म नाल सुणाईआ। ऐरापत हाथी हलूण के कंधा, हुलारा दित्ता लगाईआ। उह धरनी दा आर ते पार तक्क कन्ढा, जिथ्थे हस्स के किहा फिर के आवे माही जिस नूं फैरी कहे लुकाईआ। उह पिच्छला वक्त मेहरवाना तेरी मेहर नाल लँघा, कुछ अगला हुक्म दे

समझाईआ। मैं रोज़ तक्कदा साढ़े तिन्न इंच कन्ना कराया लंबा, जिस दी पौणा इंच चढ़ाईआ। की इस दे नाल दीन दुनी विच्च करे जंगा, कि जंगजू बहादर किस नूं दए बणाईआ। पुरख अकाल किहा शब्द दुलारे शांती विच्च हो ठंडा, निमरता विच्च बेनन्ती दे जणाईआ। आह वेख उह तक्क एह टुट्टआं दीआं पावण वाला गंढुां, गंढु धुर दा नाम रखाईआ। पिच्छला समां तक्क जो बीत्तया नहीं लंबा, दमदमा साहिब अक्ख खुलाईआ। झट्ट शब्द किहा मैं वेख्या धर्म दी धार इक्को पंजा, पंचम पंचम पंचम सोभा पाईआ। जिस दा लेखा समझ सके नहीं धार कवी बवंजा, बावन अक्खरी ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

सतिगुर शब्द कहे एह कन्ने दा की करना, उह करनी दे करतिआं दे समझाईआ। इक्क कन्ने पिच्छेजे सारे जगत नूं पया मरना, ते कन्ने दी की वडयाईआ। तेरा केहो जेहा घाड़न ते केहो जेहा घड़ना, केहो जेही बणत बणाईआ। दस्स केहड़ी कूट ते केहड़ी मंज़ल चढ़ना, पर्दा दे चुकाईआ। मैं सीस निवावां तेरे चरनां, चरनां विच्च सीस झुकाईआ। तूं सचखण्ड बैठा रहीं मार के ना धरना, धरनी धरत धवल धौल ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आपणे हत्थ रखाईआ।

जोत निरँकार किहा शब्दा उह कर लै चेता, चितमनी रहे ना राईआ। जिस वेले गोबिन्द ने लेख लिखया बैठा सी विच्च खेता, महल्ल नज़र कोई ना आईआ। कोल बहाया नहीं कोई बेटी बेटा, लिखारी लेख ना कोई बणाईआ। सारयां गुरसिखां नूं किहा मेरे वल्ल सके कोई ना वेखा, वेखण वेखण कोई ना पाईआ। मैं बदलणी दीन दुनी दी रेखा, जिस नूं रिखी मुनी समझे कोई ना राईआ। झगड़ा मेटणा मुलां शेखा, काज़ीआं कज़ा दे हत्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

सतिगुर शब्द कहे प्रभू जदों मुक्ते तों बाद लाया कन्ना, कन्ने ताड़ी दित्ती वजाईआ। शुकर किहा धन्न धन्ना, धन्न तेरी वडयाईआ। मैं बचन तेरा मन्ना, मन्न के सीस निवाईआ। तूं प्रीतम मेरे तना, तन मालक इक्क अखवाईआ। तूं मेरा रूप जना, सुनहरी रंग रंगाईआ । मैं वारी तैथ्थों खंन खंना, घोली घोल घुंमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी वडयाईआ।

कन्ने किहा गोबिन्द जिस वेले मेरा लेख लिखणा, मेरा रूप बणाईआ। मैं चौहन्दा उस वेले तेरे कोल प्रेमी होवे कोई ना सिक्खणा, सिख तेरे प्रेम विच्च ना कोई समाईआ। तूं इक्क इकल्ले मैनूं रखणा आपणे चितना, दूसर हत्थ ना कदे फड़ाईआ। मैं टकयां विच्च नहीं विकणा, कीमत जगत ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मैं दस्सां साची बात, कहाणी बेपरवाहीआ। जिस वेले गोबिन्द ने कन्ना लिखया ते लाई इक्क कनात, चारों तरफ गडाईआ। ना कोई सिख होवे मेरे साथ, संगी संग ना कोई निभाईआ। ना कोई होवे कलम दवात, धुर दे हुक्म नाल लेखा दिआं बणाईआ। ना कोई सके एहनूं वाच, वाचक हो के करे ना कोई पढ़ाईआ। उस वेले ना कोई दिवस सी ना रात, सुबह शाम संग ना कोई निभाईआ। इक्को नूर जोत प्रकाश, नूर नुराना नज़री

आईआ। सच संदेशा दित्ता आख, सहज नाल सुणाईआ। एहदा लेखा पूर करना जो मछ गिआ आख, कछप आपणा ध्यान लगाईआ । अवतारां पैगम्बरां गुरूआं दी इस दे विच्च भरी सुगात, सुगंधी धुर दी नाम तराईआ। तेरा खेल होणा फेर विच्च मात, मातर भूमी तेरा राह तकाईआ। तूं वसणा वरन गोत बाहर ज़ात, अजाति तेरा नूर रुशनाईआ। पूरन जोत तेरा प्रकाश, पूरन पूरन विच्च समाईआ। तेरा मण्डल तेरी होवे रास, तेरा खेल अगम्म अथाहीआ। तूं फेर फिर के आउणा ओस कन्ढे घाट, जिस दी घाट सारे गए रखाईआ। पन्ध मेटणा वाट, हत्थीं मैहन्दी लाल रंग रंगाईआ। तैनूं तक्कण पृथ्मी आकाश, दो जहानां सीस निवाईआ। पर वक्त याद कर लैणा लेखा लिखणा नहीं किसे उत्ते कागज़ात, कानी चले ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल कहे कन्ना बड़ा वड्डा, वड्डयां दी वड वडयाईआ। एह निरगुण धार निशाना गड्डा, सरगुण सके ना कोई उखड़ाईआ। इस ने लहणा देणा बाकी किसे ना छड्डा, छड्ड दित्ती कूड़ लुकाईआ। एह लेखा जाणे लक्ख चुरासी हड्डा, तन माटी फोल फुलाईआ। जिस दी समझ सके कोई ना वज़ा, वज़ूहत ना कोई जणाईआ। बौहड़ी दुहाई दरोही सभ दे सिर ते कूकदी कज़ा, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ । बिनां प्रभ दी किरपा तों कोई चले ना विच्च रज़ा, राज़क रिज़क रहीम सारे गावण चाईं चाईंआ। निहचल धाम सुहल्ला आवे इकल्ला सच महल्ला सुहञ्जणी होवे जगा, थलां तों जलां विच्च आपणा खेल खलाईआ । जिस नूं सारयां कहणा नूरी अल्ला, आलमीन बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

कन्ना कहे गोबिन्द ने मैनूं तिन्न वार हत्थां दे नाल रगड़या, उए मस के दित्ता वखाईआ। फेर दोहां हत्थां विच्च पकड़या, पकड़ के दित्ता टिकाईआ। फेर पुरख अकाल नाल झगड़या, शब्द शब्द नाल लड़ाईआ। तेरा जहान तेरे नालों विगड़या, की तेरी बेपरवाहीआ। तूं सूरबीर दो जहानां क्यों निगरया; बलहीण आपणा आप कराईआ। कलिजुग कूड़ कुड़िआरा वेख चढ़या सिखरया, चोटी अगनी सभ नूं रिहा लाईआ। सुण मेरे यार प्यारे मित्रया, मित्रां दिआं सुणाईआ। तेरा मानव दीनां मज़हबां विच्च खिलरया, ख़ालक दे ख़लक तेरी ओट ना कोई तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ।

कन्ना कहे मैं बण गिआ लंबा चौड़ा, मेरी गोबिन्द वंड वंडाईआ । मेरा लेखा नाल ब्रह्मण गौड़ा, गौड़ी राग दए गवाहीआ। मैं गोबिन्द दे नाल गोबिन्द दे घर प्रगटया बण के जोड़ा, दोहरा संग बणाईआ। मैनूं अन्त उस दी लोड़ा, जो लोड़ींदा सज्जण इक्क अखवाईआ । जिस ने फल वेखणा दीन दुनी दा मिट्ठा कौड़ा, कुड़तण तक्के ख़लक खुदाईआ। उहदा सस्से वाला होड़ा, हाहे दी टिप्पी दए गवाहीआ। साहिब अग्गे चले किसे ना ज़ोरा, ज़ोरू ज़र रोवन मारन धाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ।

कन्ना कहे मैं गोबिन्द कीती डण्डावत, नमस्ते सीस झुकाईआ। तूं मेरी बणाई बणावट, मेरा रूप प्रगटाईआ। मैनूं रक्खणा सही सलामत, सद आपणे रंग रंगाईआ। तेरे प्रेम दी मिले न्यामत, अंमिउँ रस चवाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा मैं तेरी प्रेम दिआं ज़मानत, पुरख अकाल

तेरा धुर दा माहीआ। तूं सोहणया अजे अणजाणत, भेव समझ सके ना राईआ। उह माण निमाणयां देवे मानत, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ।

कन्ना कहे मेरा रूप बणाया सुनहरी, मैनूं सोहणे दित्ती वडयाईआ । मैनूं तार के चल्लया विच्च बेड़े बहरी, समुंद सागराँ पन्ध मुकाईआ । मैनूं तक्कया किसे ना शहरी, शहनशाह आपणे विच्च टिकाईआ। पार कन्ढे मैनूं कढु के सत्तां गुरमुखां फड़ के प्रभ दे चरनां करना ढेरी, ज़िमीं उत्ते ना कोई छुहाईआ। फेर नौं वेरां निमस्कार करनी इक्को वारी, वेरवा विच्च ना कोई रखवाईआ। अंदर आपणे रक्खणी दलेरी, मनूआं करे ना कोई लड़ाईआ। एहो खाहिश रक्खी सी हज़रत मुहम्मद दी वछेरी, जो दर्शन पा के सीस निवाईआ। मुहम्मद किहा जिस वेले मेरा अमाम आवे सदी चौधवीं झुली होवे अन्धेरी, झक्खड़ जगत वाला नज़री आईआ। ओस तों बिनां चौदां तबकां चलाए कोई ना बेड़ी, बेड़े बह के आपणी कार भुगताईआ। कलिजुग जड़ जाए उखेड़ी, उखेड़ा आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ।

गोबिन्द कहे मैं लिखवया कन्ना कलम छाही तों बिन, प्रभ दी दया टिकाईआ। उहदा रूप हू बहू इंन, जो सुनहरी तृप्त लिआई बणाईआ। जिस दा लेखा अगम्मी चिन्न, चन्द सितारे सीस झुकाईआ । ओस दे अंकड़े सके कोई ना गिण, गिणती विच्च ना कोई समझाईआ । मेरा फ़ासला सके कोई ना मिण, मिणती जगत विच्च ना कोई बणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म आप वरताईआ।

गोबिन्द कहे मैं होया अनूप, इक्को विच्च समाईआ। इक्को शाह ते इक्को भूप, इक्को एकँकार नज़री आईआ। इक्को पिता इक्को पूत, इक्को जोत नूर रुशनाईआ। इक्को ताणा ते इक्को सूत, इक्को पेटा ते इक्को पावण वाला माहीआ। ओस वेले ना कोई तत्त वजूद पंज तत्त भूत, काया कण्पड़ ना रंग रंगाईआ। ना कोई दिशा ना कोई कूट, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। ना कोई सच ते ना कोई झूठ, कूड़ कुड़िआर ना कोई समझाईआ। ओस दा सतिगुर शब्द ते शब्द सतिगुर दा सतिगुर सबूत, बिना सबूत सतिगुर तों पूरन ब्रह्म ना कोई दृढ़ाईआ। जिस दी ना कोई पूजा ना कोई पूज, पूजण विच्च कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप खिलाईआ।

गोबिन्द कहे जिस वेले मैं कन्ना लाया, ला के दित्ता जणाईआ। त्रैगुण तों परे धक्कया दूर कराई माया, ममता मोह मिटाईआ। इक्को साहिब स्वामी पुरख अकाला दीन दयाला माही नज़री आया, नज़राना उस दी भेट कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा बह के ढोला गाया, गा के दित्ता सुणाईआ। तूं शहनशाह शाह पातशाह तेरा अन्त किसे ना पाया, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ।

कन्ना कहे जिस वेले मेरी बणाई बणत, घड़न भन्नणहार दित्ती वडयाईआ। गोबिन्द दे कोल नहीं कोई साध ते नहीं सी सन्त, गुरमुख संग ना कोई रखवाईआ। ना किसे कोल हउमे ना कोई हंगत, हउमे गढ़ ना कोई जणाईआ। ना कोई ज्ञानी ना कोई पंडत, विदवान लिखारी

भिखारी संग ना कोई बणाईआ। ना दोज़क ना बहिश्त ना जन्नत, इक्को सचखण्ड साचे वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

कन्ना कहे मैं सुणआ कन्नी, बिन कन्नां कन्न सुणाईआ। मेरा साहिब प्रभू सभ दा तनी, तन मालक इक्क अखवाईआ। जिस दी धार दीन दुनी बणी, लक्ख चुरासी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओस वेले गोबिन्द शब्द एह उच्चारा, खुशी नाल सुणाईआ। तूं निरँकार निरँकार निरँकारा, निरँकारा निरँकारा निरँकार नज़री आईआ। तूं दूला पिता मैं तेरा दुलारा दुलारा दुलारा, दुलारा दुलारा पतिपरमेश्वर तेरी सरनाईआ। तूं कल कलकी अवतारा अवतारा अवतारा, अवतर तेरा नूर अलाहीआ। तूं सम्बल आवें दोबारा दोबारा दोबारा, दोहरी आपणी खेल खिलाईआ। जेहड़ा लेख लिखया नहीं मेरे बविंजा कवीआं बण लिखारा, उह तेरे पंज लिखारी पूरा देण कराईआ। उह मेरा लहणा रह गिआ विच्च सरसा धारा, सरसे दे मालक सभ कुछ तेरी भेट कराईआ। जिस वेले तूं जाएं समुंद सागराँ पार करें उतारा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण सारे वेख वखाईआ। वेखीं मेरा आशा विच्च आशां भरया रह ना जाए लारा, लारे देण वाल्या वाअदा पूरा देणा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

कन्ना कहे मैं कोमल बड़ा मलूक, मैनूं समझ ना सक्कया कोई राईआ । मेरी चौदां तबकां तों परे गई कूक, चौधवीं सदी सुणे चाईं चाईंआ । मुहम्मद दा मकबरे विच्च तक्के कलबूत, नूर विच्च वेख वखाईआ। मूसा कहे उह मेरा वही मौजूद, चौबीसा आपणे अंग लगाईआ। उस दा सतिगुर शब्द ते शब्द अगम्मा दूत, दो जहानां हुक्म वरताईआ। उस वेले गोबिन्द ने किहा जिस वेले आर तों पार किनारा उतरना मेरे गुरमुखां विच्च होवेगा सखा सलूक, अग्गे विछोड़ा रहे ना राईआ । पिच्छेकन्ने दा लेखा ते कन्ने वाली दूज, पैरिस दा पार उतारा आपणा रंग रंगाईआ। इंगलैंड विच, धर्म दी लैंड विच, गुरमुखां दे हैंड विच, सच सटैंड करना महिफूज़, मुफ्त आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर खेल लैणा वखाईआ।

कन्ना कहे औह वेखो नारद आउँदा मारदा थापी, पट रिहा खड़काईआ। मैनूं कहन्दा उह गोबिन्द दिआ प्रेमीआ तक्क लै गुरबाणी दे हुन्दआं किन्ने वध गए पापी, पत्तित पुनीत नज़र कोई ना आईआ। दुनियां वाले तक्क लै पाठी, पूजा वाली वेख जगत लोकाईआ। जल धारा ठरदे वेख लै राती, वहणा विच्च आपणा आप वहाईआ। दीन मज़हब तक्क लै जाति, झगड़ा थाउँ थाईंआ। सति दा सच मिले कोई ना साथी, सगला संग ना कोई बणाईआ। उह वेख खेल पुरख अबिनाशी, की करता कार कमाईआ। जेहड़ी आशा गोबिन्द ने बिना गुरू बणन तों आखी, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। अज्ज तों लेख लिखणा पूरन नूं गुरू कोई ना कहेगा कोई गुरसिख नाल आपणी ज़बान ते कलम दी कलम शाही दवाती, निराकार दा रूप निरँकार पूरन नज़री आईआ। गुरू एस दी राह तक्कण ते बणदे रहे दासी, सेवक हो के सेव कमाईआ। जेहड़ी कथा कहाणी गोली जुगिंदर ने मूंहों आखी, उह वक्त नाल शहादत दए भुगताईआ। पूरन परमेश्वर पूरन सति सतिगुरू, पूरन गुरू नहीं जो जगत वाली

बणाए साखी, पूजा पाठ कर के माला मणके फेर ते आपणा साहिब मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ। कन्ना कहे मैं गोबिन्द अग्गे रक्खया आपणा फुरना, फुरनिआं तों बाहर सुणाईआ। दस्स केहड़े मार्ग तुरना, की तुरीआ तों परे चढ़ाईआ । केहड़ी दिशा मुड़ना, मोड़ के दे वखाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा सोहणिआ तूं इक्क इक्क नाल जुड़ना, जोड़ी जगत देणी तजाईआ। जिस वेले जगत जहान दा बेड़ा रुड़ना, बेड़े उत्ते बह के बेड़े दा मालक तेरा बेड़ा बंने दए लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक बेपरवाहीआ। (२३ भादरों शहनशाही सम्मत ८)

कन्ना कहे वेख विष्न ब्रह्मा, शिव ध्यान लगाईआ। धरनी दा उत्तम होया कर्मां, श्रेष्ट मिली वडयाईआ। जिथ्थे सत्तां गुरमुखां भगतां छुहाया चरनां, चरनोधक चवाया चाईं चाईंआ। झगड़ा मिटया वरनां बरनां, यसूह खुशी विच्च नच्चे टप्पे उठाए बाहींआ। सभ दी सांझी होणी सरना, मूसा मूंह दे भार ध्यान लगाईआ। मुहम्मद कहे हक़ इक्को कलमा पढ़ना, हुक्म धुर दा इक्क जणाईआ। नानक कहे नाम सति सति सभ दुःख हरना, हरनाकश लेखा प्रहिलाद रिहा समझाईआ। गोबिन्द कहे मेरा मालक करनी करना, करता पुरख इक्क अखवाईआ। जिस तोड़ना हँकारी गढ़ना, हउमे हंगता दए मिटाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं इक्को खेल करना, करनी दा करता रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ।

धरनी कहे मैं घुंमदी। भगतां दे चरन चुम्मदी। मेरी खुशी रोम रोम दी। पूजा मुक्की दोइंम सोइंम दी। मेरी लैंड सुहाई होम दी । कला रहणी नहीं किसे कौम दी। शरअ दिसे ना किसे मोम दी। लुबास वड्डिआई नहीं किसे गौन दी। हुण मेरा वक्त मैं कूकां खेल करां शोर मचाउण दी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मालक संग निभाउण दी।

धरनी कहे मेरे सीने लग्गे गुरमुखां दे पैर, सवा पहर दा कहर दए समझाईआ। जो संदेशा दित्ता मुहम्मद ने खा के ज़हर, ज़ाहर ज़हूर दित्ता दृढ़ाईआ। जो मूसा किहा सभ दा मालक इक्क नाइर, नूर ज़हूर चमकाईआ। ईसा कहे उह वेखे सारे कायनात दे कायर, कायम मुकाम आपणा हुक्म वरताईआ। मुहम्मद केहा उह पार किनारा करे रूम बाहर, बाहरा रूप सीस निवाईआ। नानक किहा शब्द दी तरनी जाए तैर, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता मन्दर मसीतां बाहर खेल खलाईआ। गोबिन्द किहा उस दी जगत कहाणी होवे सैर, सैरगाह ख़लक खुदाईआ। उह लेखा मेरा पूरा करे ना लाए देर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ। कन्ना कहे गुरमुखो गुरसिख दी धार बणना कन्ना, कंनया अष्टभुज दए गवाहीआ। जगत जहान तोड़ना बंना, बन्दगी आपणी बल प्रगटाईआ । जिस पाहन पत्थर नूं याद कीता धन्ना, सो धनाढ हो के तुहाद्धा खेल खिलाईआ। तुसीं सुणना सभ ने नाल कन्नां, कन्ना कहे कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। जगत झगड़ा झूठा माटी चंमा, एहो संदेसा पहलों सुणया विष्न ब्रह्मा शिव दित्ता दृढ़ाईआ। ना कोई हरख सोग ना ग़मा, चिन्ता चिखा ना कोई रखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग इक्क रंगाईआ।

गोबिन्द कहे जिस वेले मैं कन्ने दा कीता इशारा, ईश्वर मेरे सनमुख सोभा पाईआ। मैं नौं वार कीती निमस्कारा, नव नौं चार दा पन्ध मुकाईआ। नाले किहा मेरे शहनशाह शाह सिकदारा, तेरी शहनशाहीआ। जे मैं आउणा फेर दुबारा, तत्तां रंग ना कोई रंगाईआ। तेरा खण्डा शब्द होवे मेरी दो धारा, धरनी धरत धवल आकाशां वेख वखाईआ। मेरे बुत्त दे थां तेरे सुत गुरमुखां दा होवे मुनारा, जिस नूं रिखी मुनी सीस निवाईआ। तूं पहुंचणा ओथ्थे जिथ्थे तेग बहादर ने दस्सया तेरा होवे दीदारा, एहो मैं दादू आया समझाईआ। बुधू शाह नूं दस्सया सी मेरा पीर गुणी गहीर बेनज़ीर बदले तकदीर सर्ब संसारा, सहिसा जगत ना कोई रखाईआ। तूं मेरा महिबूब मैं तेरा दुलारा, दूले गुरमुख लैण उपजाईआ। जिन्हां छड्डया होवे घर बाहरा, परदेसां विच्च परदेसी तेरा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी रंगत रंग रंगाईआ।

कन्ना कहे धरनीए गुरमुखां दे डिग्ग पओ चरनां उत्ते, आपणे प्रभ नूं लै मनाईआ। नी तेरे कमलीए भाग जाग पैण सुत्ते, नी सुतीए लै अंगढ़ाईआ। जेहड़े तेरी खातर जगत दी धार विच्च रहे गुस्से, गुस्सा गोबिन्द दी झोली पाईआ। नी उह कौल इकरार वाअदे तेरे पिच्छले सारे पुज्जे, पूजण वालीए कर लै बेपरवाहीआ । जेहड़े मसीह ने भेव रक्खे सी गुज्झे, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द इशारा गिआ सुणाईआ। उह नी खेल करन आया उघे, जिस नूं उगण आथण ताईं मनी सिँघ गिआ सीस निवाईआ। ना उह बुत्त ना उह दिसे खानयां विच्च बुते, बुतीआं करन वाला धुर दा माहीआ। जो सन्त सुहेले भगतां आपणी उस अगम्मी गोदी चुक्के, जिथ्थों बाहर ना कोई कढ्ढाईआ। हुण आ गिआ रंग रंगा गिआ भगत बहा गिआ नी तेरे सीने उत्ते ज़ीन दे तिन्ने मुख शहादत रहे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

कन्ना कहे नानक आया हत्थ विच्च फड़ के खूंडी मोढ्ढे खेसी, ख़ालस सभ नूं रिहा जणाईआ। इक्क शहनशाह इक्क नरेशी, नरायण इक्क अखवाईआ। मैं बगदाद लिखया दित्ती सिख्या धरनी नूं पाई भिख्खया नी तेरे उत्ते मेरा महिबूब आवे ते नाल गुरमुख होण प्रदेशी, प्रदेशां विच्च आपणा पन्ध मुकाईआ। जिन्हां दी गोबिन्द धार सिक्खी, निभे नाल केसी, केसगढ़ दा लेखा पूर कराईआ। जोत दी धार शब्द सति सति सरूप अनूप सरूप आत्मा प्रभू दी बेटी, बेटा आत्म इक्को इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आपणे विच्च समाईआ।

कन्ना कहे मैनूं हत्थ लग्गे सत्त, सति मिली वडयाईआ। मेरी मातलोक रहि गई पत, पतिपरमेश्वर होया सहाईआ। मैं सतिगुर शब्द नूं देवां दस्स, दस्स दस्स के खुशी बणाईआ। मेरा मालक मेरा देवण आ गिआ हक़, हकीकत आपणी विच्चों प्रगटाईआ। मैं उस नूं कुछ नहीं केहा गुड्ड लक, शुकराने विच्च शुकर ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप कराईआ।

कन्ना कहे ओए कन्या, की करन दित्ता बणाईआ। तूं फिरे जगत जहान केहड़े बंनया, भज्जें वाहो दाहीआ। कवण विटो वारी होए चहुं खंनया, चौगिर्दे वेख वखाईआ। तूं क्यों चौड़ा

तूं क्यों लम्मया, लम्मा पै के दे समझाईआ। झट्ट कन्ना रो पया छम्म छम्मया, बिन नैणां नीर दित्ता वरसाईआ। मैं जगत जहान वेख के कम्बया, थरथराहट विच्च दुहाईआ। सारे प्रभू नूं गाउँदे नाल दम्मया, दामनगीर दामन गंढु ना कोई रखाईआ। मैं वेख्या चौदां सौ तीह अंक दा पंनया, पर्दा पर्दा परदे विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप सुणाईआ।

कन्ना कहे गोबिन्द मरगिंद बख़शिंद, बख्शणहार इक्क समझाईआ। जीउ पिण्ड वेख ब्रह्मण्ड लेखा इंड, इन्दरासण सिँघासण सारे खोज खुजाईआ। सागर सिंध मेटे चिन्द, हरिजन बणाए धुर दी बिन्द, बिन्दरबन वासी जिस दा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप सुणाईआ।

कन्ना कहे कौल मेरा मेरा इकरार तेरा तेरा इकरार पक्का, पक्की पक्कयां नाल पकाई होई आ। तूं महिबूब मेरा आरज़ू मेरा आलीज़ाह आलमा दा यार सका, ते सज्जण सच दा सच अखवाईआ। मैं किस नूं केहड़ी धार विच्च तक्कां, बिन तुध तों दूजा नज़र कोई ना आईआ । तेरा मुकाम मेरे मेहरवान सदा लापता, निशानिआं तों बाहर निशाना सारे गए जणाईआ। आपणा भेव दस्सीं मेहरवान रता, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। मैनूं इउँ दिसया गोबिन्द तेरे सत्थर लथ्था, ते सत्थर यारड़े वाला हंढ्ढाईआ। उस दी धार विच्च उसे दे प्यार विच्च जन भगतां दी एस धरनी उत्ते नवीं बणा के कथा, जिस नूं कथनी कथ ना सके राईआ। एथ्थे सवा पहर बल दा खलोता सी रथा, पवण पाणी सारे देण गवाहीआ। बावन दा पवण इथ्थे इशारा दे गिआ कलिजुग आए पुरख समरथा, समरथ आपणी दया कमाईआ। जिस ने दीन दुनी ते दुनियांदार दी धार तों बाहर संसार विच्च मारना शब्द अगम्मी छप्पा, छुपया नज़र किसे ना आईआ। नाले ज़बान नाल अक्खर लिखया पप्पा, माटी रस नाल वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ।

कन्ना कहे गुरमुखो मैं दस्सां पिच्छली बाती, बातन भेव खुल्ह़ाईआ। मैनूं गोबिन्द लिखया ना सुभा ना राती, वक्त जग़ा ना कोई रखाईआ। उस वेले महिबूब आया मेरा साहिब कमलापाती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। पैहलों गोबिन्द दे अंदर मारी झाकी, फेर नूर नुराना अक्खां अग्गे नूर चमकाईआ। फेर हस्स के केहा उठ वेख अग्गे वल झाकी, अग्गा दयां वखाईआ। झगड़ा मेटणा जिस वेले जाति पाती, तेरा लहणा नाल मिलाईआ। गोबिन्द किहा मेरे पुरख अकाला दीन दयाला मेरे मेरे नाल जेहड़े होणगे साथी, गुरमुख सोभा पाईआ। फेर नौं खण्ड पृथ्मी तेरे हुक्म विच्च पन्ध मुका के कट्टांगा वाटी, नेड़ा दूर ना कोई रखाईआ। सारीआं मंज़लां चढ़ांगा गुरमुख खड़ांगा उस दी घाटी, जिथ्थे तेग बहादर उंगली गिआ उठाईआ। मेरी नौं साल दी आयू मैं हत्थ मारया सी उत्ते छाती, छत्तरधारीआं करां सफ़ाईआ। उस दा लहणा ज़रूर तैथों पूर करावांगा बाकी, लेखा तेरा तेरे कोलों चुकाईआ। बेशक बच्चे भुल्ल के कोटन वार करन गुस्ताख़ी, सतिगुर दीन दयाल बख्शणहार पुरख अकाल तूं आदि अन्त इक्क अखवाईआ। इंगलैंड विच्च वड़दयां पिच्छली सारी बदल जाणी साखी, अगला लेखा नवें तों नवां देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

धरनी कहे गुरमुखो मैनूं दबाओ नाल अड्डी, थोड़ी थोड़ी थोड़ी तिन्न वार लगाईआ। मैं वी

उडीकदी उनीसवीं बीसवीं सदी, सदी चौधवीं दूरों वेखे राह तकाईआ। सारे आपणी आपणी वार आपणा भार गए लद्दी, जगत जहान नज़र कोई ना आईआ। दीनां मज़्बां दी चलाउँदे गए गद्दी, हिस्सयां वाली वंड वंडाईआ। मैं दोवें हत्थ समरथ अग्गे खलोता अड्डी, अड्डी चोटी तक्क ध्यान लगाईआ। मेरे मालक ख़लक दे ख़ालक मैं बहुती नहीं हुंदी लबी, लब्बां तों मुसकरा के दिआं सुणाईआ । तूं शहनशाह नूर अलाही रब्बी, रब्बे आलमीन तेरी वडयाईआ। तेरी जोत बिनां शरअ तों जगी, चार कुण्ट होवे रुशनाईआ। मैं खुशीआं विच्च फिरां भज्जी, भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग देणा रंगाईआ। कन्ना कहे धरनीए नी तूं धरनी बणना के धर्म, सच दे सुणाईआ। धरनी किहा ना मैं आपणा करां कोई कर्म, कर्म कांड ना कोई रखाईआ। मैं चाहुंदी सदा (गाउँदी) ध्याउँदी इक्को मिले सरन, सरनगत इक्को इक्क अखवाईआ । जिस दी मंज़ल अवतार पैगम्बर गुरू सारे सिलसलेवार चढ़न, जुग जुग पान्धी आपणा पन्ध मुकाईआ । मैं उस दा पल्लू फड़ां लड़न, जिस दा लड़ ना कोई छुडाईआ। जो नवीं साजना आपणी घाड़त आया घड़न, घड़े घुम्मयार ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ।

कन्ना कहे मैं दस्सां खेल अपारा, सति सति सत्त वार सुणाईआ। जिस दिन गोबिन्द ने मैनूं कीता त्यारा, मेरा नूर प्रगटाईआ। उस वेले ज़रूर गुरसिखां नूं इक्की घंटे मुख छुहाउण दित्ता नहीं सी कोई जगत वाला सहारा, अन्न मुख ना कोई छुहाईआ। मैं रो के किहा पुकारा, कूक कूक दृढ़ाईआ। ऐ सतिगुर एह की वरतया कहरा, क्यों भुक्खे दित्ते रखाईआ। गोबिन्द हस्स के केहा कन्नया वड धंनया, तूं मेरा कहणा मन्नया, मैं आपणी धारों तैनूं जन्मया, जन्म देण वाली कोई ना माईआ। जिस वेले दीन दुनी दा तोड़ां बन्नूया, पुरख अकाल आवे भंनया, नज़र दिसे ना कलिजुग जीवां अंनिआं, तेरा लहणा देणा उसे दे हत्थ उसे दा कहणा मैं मन्नया, मनसा धुर दी दयां जणाईआ। एह मेरी होवे निशानी, खेल श्री भगवानी, तूं समझ जा जगत जहानी, सूरबीर बण मर्दानी, उस दिन फेर ना किसे पीणा पाणी, खाणा हत्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप कराईआ।

गोबिन्द किहा कन्नया जिस वेले तूं गिउँ जगत दवार, भगत मिले वडयाईआ। तेरे नाल दीन दुनी दा बदल जाणा विवहार, विवहारी आपणी खेल खिलाईआ। गुरमुखां दी महकणी टहकणी गुलज़ार, फुलवाड़ी सच रंग रंगाईआ। कन्ने किहा मैं ज़रूर करां इंतज़ार, खुशीआं विच्च ध्यान रखाईआ। जिस वेले मेरा साहिब आवे तेरा हुक्म बणे सची सरकार, सच दे मालक वेखां चाईं चाईंआ। नाले निउँ के करां निमस्कार, बिनां धरती तों सीस निवाईआ। गोबिन्द खुशी विच्च ताली दित्ती मार, हत्थ दोवें लए उठाईआ। एस वक्त नूं लैणा संभाल, सम्बल विच्च लेखा पूर कराईआ। तेरी पूरी करनी घाल, घाल सभ दी लेखे पाईआ। पैहलों तेरा हल्ल करां सवाल, मुशकल पिच्छली रहे ना राईआ। फेर गुरमुखां भगतां सच भंडारा देवां खवाल, कन्या तैनूं भंडारे नाल छुहाईआ। कन्ना कहे मेरे सतिगुरू तूं मुरदे देवें जवाल, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। मेरा लेखा अग्गे लिखणा होवेगा बेमिसाल, जिस दी मिसल ना कोई रखाईआ। हरिजन गुरमुख तेरे अग्गे पिच्छेसज्जे खब्बे रहणगे नाल, चल्लण चाईं चाईंआ।

गुट्ट ते बध्धा होवेगा चिट्टा रुमाल, रोमन कैथलक दोवें वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लैणा मिलाईआ।

कन्ना कहे गुरमुखो शाबाश, शाबा शाबा तीन लोक कराईआ। शंकर झुकदा उत्तों कैलाश, ब्रह्मा ब्रह्मलोक वेख वखाईआ। विष्नूं फिरे आस पास, चारों कुण्ट आपणा रंग रंगाईआ। तुसीं उस धरनी दी धरती दी जगा नूं कीता तलाश, जिस उत्ते इशारा इशारे वाले गए कराईआ। तुहाढ्ढी सभ दी कल सुभा नूं चिट्टी होवे पुशाक, चिट्टे बसत्रां नाल सीस लैणा झुकाईआ। इक्को सभ ने मन्नणा माई बाप, पिता पुरख अकाल बेपरवाहीआ। पैहलों अंदरे अंदर चुप्प चुपीतिआं ठांडे सीतिआं पंज वार करना सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दा जाप, जप जप के अंदरे अंदर टिकाईआ । ना जन्म रहे ना कर्म रहे पिछला पिच्छेधोता जाए पाप, पत्तित पुनीत सारे लए बणाईआ। तुहाढ्ढे कोलों शब्द लिखाउणा पंजाब पहुंचाउणा संदेशा देणा पन्थ खालसे खास, खास आपणा रंग रंगाईआ । तुसीं उह दुलारे गोबिन्द प्यारे जिनां दी पूरी होई अरदास, फेर अरदासे दी लोड़ रही ना राईआ। तुहाढ्ढा लेखे लग्गा स्वास स्वास, साह साह तुहाढ्ढा मालक स्वामी तुहाढ्ढे विच्च समाईआ। कन्ना कहे मैं इक्को गल्ल इक्को बचन इक्को शब्द इक्को नाम इक्को कलमा इक्को प्यार मुहब्बत विच्च चल्लया आख, आख़र आख़र इक्क सुणाईआ। मैनूं फेर हत्थ लाओ सत्ते कहो साड्ढा इक्को पित मात, भैण भरा सज्जण मीत सच्चा संगी बहु रंगी अनक कल धारी जोत निरँकारी पुरख बिधाता सहायक नायक खसम खसमाना श्री भगवाना मेहरवाना महिबूब गोबिन्द धार धार गोबिन्द गोबिन्द गुरसिख गुरसिख गोबिन्द सिख गोबिन्द गोबिन्द मरगिंद मेटे चिन्द चिखा चिन्त जगत जहान तों बाहर कढ्ढाईआ। (२२, २३ भादरों शहनशाही सम्मत ८)

गोबिन्दा कन्ना कहे मैं चार जुग दे शास्त्रां वेखे अक्खर, निरअक्खर धार विच्च प्रभू दयां जणाईआ। काया माटी जगत जहान तक्के बुत्त पत्थर, पाहिन पाहिनां खोज खुजाईआ। खेल वेख्या निरगुण सरगुण सूरा लथ्था यार दे सत्थर, सेज अगम्मी इक्क हंढ्ढाईआ। नेत्र नैण लोचण विरोलया कोई ना अत्थर, चिन्ता ग़म ना कोई रखाईआ। जां निगाह मारी जो धार चढ़या चोटी सिखर, जिस दी मंज़ल महिबूब विच्च नज़री आईआ। नाम संदेशा शब्दी धार लेख लिखया अनोखा पत्र, जिस दी कागद कलम छाही सार कोई ना पाईआ। उह नूर नुराना शाह सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना दीपक लग्गा जगण, जागरत जोत बिन वरन गोत अगम्म अगम्मड़ा नज़री आईआ। तत्त वजूदा हक़ महिबूबा सति सति सति विच्च होया मग्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

कन्ना कहे जिस वेले गोबिन्द बणया मेरा लिखारी, लेखक कातब दो जहान सीस निवाईआ। जोत धार हाज़र होए तेई अवतारी, अवतर आपणा पन्ध मुकाईआ। मूसा ईसा हज़रत मुहम्मद वेखण नैण उघाड़ी, बिन लोचन अक्ख खुलाईआ। नानक निरगुण सरगुण जोत नूर उजिआरी, जोती जाता डगमगाईआ। गोबिन्द इशारा कीता एह खेल अगम्म अपारी, अलक्ख अगोचार आपणी कार भुगताईआ। मैं सुत दुलारा विच्च संसारा सेवक सेवादारी, याचक हो के धुर

दी सेव कमाईआ। एह हुक्म संदेसा नर नरेशा देवणहार एका एक एकँकारी, अकल कलधारी आपणा हुक्म सुणाईआ। जो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर प्रवरदिगारी, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दरगाह साची मुकामे हक़ आपणा नूर नूर करे रुशनाईआ।

एह धुर दा कन्ना, जिस ने मेटणा हद्द बंन्ना, सति प्रकाश कराए चन्ना, सदी चौधवीं चौदां तबकां मुहम्मद वाले राह तकाईआ। जिस दी शहादत अबादत सदाकत विच्च भेव खुल्ह़ाए चौदां सौ तीह अंक दा पंना, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जिस विच्च ना कोई हरख सोग ना ग़मा, चिन्ता चिखा ना कोई जणाईआ। ना कोई तृष्ना ना कोई तम्ह़ा, तामस अगन ना कोई लगाईआ। जिस दी सार पा सके ना ब्रह्मा, चार वेद कहण किछ ना पाईआ। शंकर जाणे मूल ना धरमा, सिँघारी बैठा सीस निवाईआ। विष्नूं विश्व तोड़ ना सके भरमा, भाण्डा भरम ना कोई भन्नाईआ। सो पुरख निरञ्जण हरि करता करनी करना, हरि पुरख निरञ्जण अगम्म अथाहीआ। जिस दा लेख बिन गोबिन्द किसे ना पढ़ना, जगत विद्या चले ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा आप चुकाईआ।

कन्ना कहे जिस वेले गोबिन्द मेरा बणाया रूप, रेखा जगत ना कोई जणाईआ। मैनूं नज़री आया सति सरूप, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी जलवागर नूर अलाहीआ। जिस दा खेल अगम्मा चारे कूट, चारे खाणी चारे बाणी चारे जुग खेल खलाईआ। जिस संदेसा दित्ता सदी चौधवीं अन्तम सभ दा होणा कूच, शरअ दा कूचा गली रहण कोई ना पाईआ। बिन नैणां रोवण खाने बूत, तत्तव तत्त धीर ना कोई धराईआ। हुक्म वरतणा अबिनाशी अचुँत, चेतन्न सभ नूं दए कराईआ। जिस दी सुहञ्जणी इक्को होणी रुत, रुतड़ी धुर दी नाल आपणा आप महकाईआ। जिस दी आशा तेग बहादर रक्खी आपणे अंदर मुख, रसना जिह्वा बाहर ना कोई कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दी रंगत इक्क रंगाईआ।

कन्ना कहे गोबिन्द मेरी धार बणाई अव्वली, अव्वला अलाह आलमीन जणाईआ। मेरी सूरत मूरत तूरत जगत जहान नालों इकल्ली, अकल कलधारी दित्ती वडयाईआ। जिस दा लहणा देणा पूरा कर ना सक्कया हज़रत अली, खण्डा खड़ग दए गवाहीआ। मुहम्मद दी धार रह गई तेल दी पली, पलकां दे पिच्छेनूर अलाही नज़र किसे ना आईआ। जो हज़रत मूसा खेल खिलाया बण के वली छली, नैण मूंध मूंह दे भार सुटाईआ। जिस हज़रत मसीह ईसा अन्तम कीमत पाई इक्क कली, फूल फूलन वंड वंडाईआ। गोबिन्द गुरमुखां सीस धराया प्यार विच्च तली, मुहब्बत नाम रंग रंगाईआ। उस दा लहणा देणा अन्तम होणा जली थली, जल थल महीअल वेख विखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ।

कन्ना कहे गोबिन्द जिस वेले गोबिन्द मेरी धार कीती शुरु, शरअ जगत दा डेरा ढाहीआ। बिनां शब्द तों रहे ना कोई सतिगुरू, सतिगुर शब्द इक्क शरनाईआ। जिस दा मंत्र नाम निधाना इक्को फुरना फुरू, जगत फुरनिआं तों बाहर शनवाईआ। उस दा मार्ग जगत जहान एकँकार दी धार एको तुरू, तुरीआं तों परे आपणा पर्दा लाहीआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त परम पुरख परमात्म परवरदिगार हो के मुड्ढ, मोड़ा जगत जहान वाला रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

कन्ना कहे जिस वेले गोबिन्द मेरा मिल्या धुर परवाना, परम पुरख दित्ती वडयाईआ। उस नौं वार तक्कया ज़िमी ज़िमी असमानां, असमानां तों परे ध्यान लगाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता नज़री आया नौजवान अगम्मा काहना, जिस नूं कोटन कोट काहन बैठे सीस निवाईआ। जिस दे चरन कँवल केते राम करन बिसरामा, विष्न ब्रह्मा शिव दूर दुराडे सीस निवाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद निरगुण धार करन सलामा, सयद्यां विच्च सीस झुकाईआ। कदम बोसी विच्च करन प्रनामा, प्रवरदिगार तेरी वडयाईआ। जिस दा निरगुण सरगुण नानक मंत्र गाया सतिनामा, सति सति तेरी सरनाईआ। सो गोबिन्द धार जोधा सूरबीर बली बलकार करे खेल जगत जहाना, जागरत आपणा रूप दरसाईआ। कन्ना कहे मेरा लेखा बणाया जिस दा भेव समझे कोई ना राईआ। अक्खरां विच्च दीन दुनी गाए गाणा, पर्दा सके ना कोई उठाईआ। मैं सच दस्सां सतिगुर शब्द गोबिन्द गोबिद सतिगुर सिँघ गोबिन्द दित्ता इक्क ब्याना, बिना कलम छाही कागज़ तों धुर फुरमाउणा इक्क सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

गोबिन्दे फ़रमान असत तलवीज़ा हमजूल चोईज़े नज़सत कोमल हमअम दीने ज़लम चोसे अज़म कोने ज़दा ज़दा सहंमदे खुदा निज़ाले अलाह ज़ूकोह ज़वा रहिनमाए बेपरवाह पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। जो पैगम्बरां वेखे दुआ, दावतनामे सभ दे फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा वक्त आप सुहाईआ। कन्ना कहे गोबिन्द मेरा अक्खर बणाया आप, आपणी दया कमाईआ । फेर पुच्छया कोलों आपणे बाप, जो पिता पुरख अकाल धुरदरगाहीआ।, मेरा निशाना जगत जहाना तेरा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। सच संदेशा देवां जिउँ भावे तिउँ लैणा राख, रक्खक हो के आपणी दया कमाईआ। मैनूं इउँ दिसदा मेरे ढईए तों बाद दीन मज़ूब रहणा नहीं कोई पाक, पत्तित पुनीत ना कोई कराईआ। अवतारां पैगम्बरां गुरूआं देणा नहीं किसे दा साथ, सगला संग ना कोई रखाईआ। फिरनी दरोही पंज तत्त माटी ख़ाक, ख़ालस रंग ना कोई चढ़ाईआ। तूं निगाह मार लै तेरयां दीनां मज़ूबां मानस जाति विच्च रहण नहीं दित्ता इतफ़ाक, तेरे नाम कलमे दीन दुनी रहे लड़ाईआ। मैं मंग मंगाँ सचखण्ड दवारे उठा के दोवें हाथ, बिन हथेली हाथ वखाईआ। तूं साहिब पुरख समराथ, शाह पातशाह शहनशाह धुरदरगाहीआ। जो तेरी धार नौं दवारे बाहर गुर तेग बहादर गिआ आख, दिल्ली धार दलील बणाईआ। हज़रत ईसा सदी बीसवीं अक्खीं ताक, उसे दा इशारा दित्ता दृढ़ाईआ। जिस वेले कलिजुग होई अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। मुहब्बत रहे ना पिता मात, पूत सपूत ना कोई अख्वाईआ। झगड़ा होवे ज़ात पात, दीन दुनी करे लड़ाईआ। सच दे उतरे कोई ना घाट, नईआ नौका नाम ना कोई चढ़ाईआ। सदी चौधवीं अन्तम मुहम्मद दी मिटणी वाट, बीस बीसा ईसा राह तकाईआ। उस वेले खेल करना पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणी कार भुगताईआ। मेरी पूरी करे आस, आशा पूरन दए दृढ़ाईआ। सच मण्डल दी साची वेखे रास, रहबर हो के नूर खुदाईआ। गोबिन्द कहे मेरा कन्ना उसे हुक्म दी शाख, जिस दी शनाख़त तेग बहादर गिआ समझाईआ। धर्म संदशा शब्द सुनेहुड़ा नाम निधाना सुनाउणा आप, आपणी दया कमाईआ। जिन्नां दी मुहब्बत प्यार विच्च टोपी वाले कहि के रक्खी आस, जड़ कूड कुड़िआर उखड़ाईआ। एह गोबिन्द कन्ना जाणा उहनां दे घाट, जिस दा घाटा समझ कोई

ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

कन्नां कहे मैनूं गोबिन्द बणा के दित्ती सलाह, मशवरा बिन मशवरे दित्ता जणाईआ। तेरा मालक इक्को मलाह, जो नईआ नौका बेड़े दो जहान चलाईआ। जिस नूं ओम गाड हरि ओम कहन्दे खुदा, वाहवा वाहिगुरू कह के सीस निवाईआ। तूं उस दा मार्ग देणा बदला, बदली करा थाउँ थाईंआ। कलिजुग कूड़ कुड़िआरा मेटणा अन्धेरा छाँ, साचा नूर कर रुशनाईआ। इशारा दित्ता तूं पुजणा उस किनारे थां, जो थांन थनंतर बल गिआ समझाईआ। जिस दा मार्ग अपनाया बावन हो के बेपरवाह, बेपरवाही विच्च समाईआ। सलीव लैंदिआं ईसा ने कीती सी इक्क दवा, दोवें हत्थ हत्थ उठाईआ। मेरी सदी बीसवीं मेरे लहणे देणे सारे दईं चुका, चुकन्ना हो के दयां सुणाईआ। मेरे बाप वाहिद मालक तूं ज़रूर जाणा आ, निरगुण निराकार आपणा खेल खिलाईआ। मैनूं इउँ दिसदा तेरा गोबिन्द सूरा शब्द सुत जिस ने सभ दी पकड़नी बांह, बाज़ू वंड ना कोई वंडाईआ। आत्म परमात्म समझाउणा नां, दूजा नज़र कोई ना आईआ। सो दीनां मज़्बां विच्च रसूलां तैनूं लया गा, ढोले सिफ्तां वाले सुणाईआ। तूं अन्तम सभ दा फ़ैसला देणा करा, अदल इन्साफ़ तेरे हत्थ नज़री आईआ। मेरी पेशीनगोई गोबिन्द दा कन्ना मैनूं दिसदा साख्यात मैं खुशी विच्च कहां वाह वा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। उस कन्ने दा अन्त कायनात दा अन्त दए करा, मख़लूक दे मालक ख़लके खुदा तेरी वड वडयाईआ। पर मैं चौहन्दा जिथ्थे मैं नहीं पुज्जा उथे उस नूं देणा पूजा, हद्द जगत ना कोई रखवाईआ। नित्त नवित्त खेल करना तेरी अदा, अदब विच्च सीस दयां निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। कन्ना कहे मेरे अंदर आई खुशहाली, खुशीआं ढोले गाईआ। मेरा साहिब दीन दुनी जगत बाग़ दा माली, मालक नूर अलाहीआ। जिस ते अग्गे तेई अवतार हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद दस गुरू विष्न ब्रह्मा देवत सुर खड़े सवाली, खाली झोलीआं रहे डाहीआ। तेरा नाम कलमा शब्द धार शब्द संदेशा शब्द धुन जगत धुन नादा दी ताली, छत्ती राग भेव कोई ना पाईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग सारे दिसण खाली, वस्त अमोलक आपणी गोलक विच्च ना कोई टिकाईआ। कोटन कोटन तेरे नाम जगत दी करदे गए दलाली, विचोले सोहले ढोले तेरे गाईआ। तूं मेहरवान महिबूबा वसे अर्श उच्च अरूजा अन्तम समां वेखणा हाली, हालत ख़लक खुदाईआ। जेहड़ी गोबिन्द तेरे प्यार विच्च घालण घाली, आप आपा घोल घुंमाईआ। फल लाउणा अन्त उस दी डाली, पत टैहणी देणी महकाईआ। तेरा नूर नुराना शाह सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना श्री भगवाना इक्को जोत जोत दी होवे लाली, लाल गुलाले नूर नूराने नूरी चन्द देणा चमकाईआ। सचखण्ड दवारा एकँकारा दरगाह साची मुकामे तेरी होवे धर्म दी होवे सच्ची धर्मसाली, दूजा दर नज़र कोई ना आईआ। तूं सम्बल बहके सभ दी करें संभाली, गोबिन्द संभल के तेरा लेखा गिआ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ।

गोबिन्द कहे मैं कन्ने नाल लाई आपणी शर्त, शरअ शरअ दित्ती बदलाईआ। फेर हत्थ मारया उत्ते फर्श , धरनी धरत धवल धौल दित्ती हिलाईआ। फेर तक्कया उपर अर्श, लक्ख आकाशां आकाश बैठे सीस निवाईआ। फेर पुरख अकाल अग्गे दित्ती अर्ज़, बेनन्ती अगम्मी दित्ती

सुणाईआ। उठ खेल तक्क आपणा असचरज, अचरज लीला वेख वखाईआ । कलिजुग अन्त अवतार पैगम्बर गुरूआं सभ ने तेरी रक्खी गर्ज़, गर्ज़ के पेशीनगोईआं विच्च तेरा राह गए समझाईआ। तूं निरगुण निरवैर निराकार निरँकार पुरख अकाले आउणा परत, पतिपरमेश्वर आपणा फेरा पाईआ। शरअ छुरी कटाकश करे कोई ना करद, दीन मज़्ब कातल मकतूल दा लेखा देणा मुकाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां गुरमुखां गुरसिखां भगतां सन्त फ़कीरां सूफ़ीआं वंडणा दर्द, दर्दी हो के दर्द सभ दा देणा गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नूर नुराना आदि जुगादी जोधा सूरबीर मरद, मदद अवर ना कोई रखवाईआ। (२४ भादरों शहनशाही सम्मत ८)

कलिजुग कहे मैनूं होर हो गिआ इशारा, मेरे अंदर दित्ता दृढ़ाईआ । कलिजुगा औह वेख तेरा किनारा, नईआ डोले थाउँ थाईंआ। जिस वेले गोबिन्द ने गुरू ग्रन्थ साहिब लिखया दुबारा, इक्क कन्ना विच्च देणा लगाईआ। ओस ने लेखा मुक्का वखा देणा चार यारा, मुहम्मद दी सफा दए उलटाईआ। ईसा मूसा सुड्डे मूंह दे भारा, सिर सके ना कोई उठाईआ। तेरा मिटे अन्ध अन्धयारा, लोकमात रहण ना पाईआ। फेर उस दा रूप होणा अगम्म अपारा, तत्तां तों बाहर खेल खलाईआ। शब्दी शब्द होए जोत जोत दी धारा, धरनी धरत धवल उत्ते आपणा रंग रंगाईआ। इक्को हुक्म देवे सच्ची सरकारा, शाह सुल्ताना आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ।

कलिजुग कहे मैं वेखणा ज़रूर कलगीधर, जगदीश जिस नूं दए वडयाईआ। जिस दे कोलों मैनूं मिलणा वर, मेरी झोली देणी भराईआ। मेरी कूड़ी उखड़नी जड़, लोकमात रहण ना पाईआ। मैं कूड़ कुड़िआर दी अगनी जावां सड़, हवन सच ना कोई कराईआ । मेरा सीस रहे ना धड़, तन वजूद ना कोई वडयाईआ। मैं जीउँदा जावां मर, मर जीवत आपणा आप बदलाईआ। मैं ज़रूर ओस साहिब दा वेखणा घर, जिस घर विच्चों गोबिन्द नूं मिले वडयाईआ। की उह रूप नरायण नर, की करता धुरदरगाहीआ । की परवरदिगार सच्चा यार, यराना सभ दे नाल रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा दए खुल्ह़ाईआ।

कलिजुग कहे मैं गोबिन्द दे चरन दवारे पुज्जा, माछूवाड़ा सेज सुहाईआ । मैं आपणा भेव रक्ख के गुज्झा, दूरों सीस दित्ता निवाईआ। नाले आपणा नैण कर के ऊंधा, अक्ख लई शरमाईआ। झट्ट गोबिन्द हस्से के केहा आह वेख नानक सतिगुर मेरे अंदर वड़ के कूंदा, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जिस दा लेखा रूह बुत्त बुत्त रूह दा, रूह बुत्त तों बाहर नूर जोत विच्च समाईआ। एहो लख़श एहो लच्छण पूरे सतिगुर दा, जो शब्द शब्द शब्दी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ।

कलिजुग कहे मैं अक्खां झट्ट लईआं मीच, हत्थ सिर उत्ते टिकाईआ । मैं गाया गोबिन्द माही दा गीत, गोबिन्द तेरी बेपरवाहीआ। तूं दस्स तैनूं मन्दर चंगा कि मसीत, कि काअबिआं खुशी

बणाईआ। ऊँच चंगा कि नीच, शतरी ब्राह्मण शूद्र वैश किस नूं गले लगाईआ । झट गोबिन्द ने किहा कलिजुग ऐस धरनी नूं कहो मेरे सतिगुर नानक दी करे तस्दीक, शहादत देवे पाईआ। मेरा किसे दा ना कोई शरीका ते ना कोई शरीक, लाशरीक मेरा रूप दित्ता बणाईआ । मैं त्रैगुण तों अतीत, त्रैभवण दा मालक मेरा खेल रिहा खिलाईआ । मैं वस्सया बेशक पंजां तत्तां विच्च ठीक, पर ठाकर दा रूप मेरे नाल इक्को नूर बैठा बणाईआ। मैं सभ नूं वेखां हस्त कीट, हस्त कीट इक्को रंग रंगाईआ। आह लै होर तैनूं दस्सां हुक्म इक्क अनडीठ, की अनडिट्ठड़ी कार कमाईआ। मेरा पुरख अकाला दीन दयाला मैनूं माछूवाड़े कर रिहा बख्शीश, रहमत मेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा नूर नूर रुशनाईआ।

कलिजुग कहे गोबिन्द की पुरख अकाला पावे तेरी झोली, कुछ मैनूं दे वखाईआ । गोबिन्द किहा उह कुड़या उह किसे कंडे ना जावे तोली, अतुल रिहा वरताईआ। तेरी सुरत रहे ना भोली, भोलया दयां समझाईआ। जिस साहिब दी आदि जुगादी दी सारी सृष्टी दी दृष्टी अन्तर निरंतर आत्म गोली, सेवा विच्च सेवक सारे झट्ट लँघाईआ। ओस दी अन्त समझ लै बोली, की ढोला रिहा सुणाईआ । जिस ने दीन दुनियां दे मज़ूब दी चुकाउणी रौली, रौला नाम कलमा ना कोई रखवाईआ। सभ नूं अमृत आत्म दी देवे पौली, धुर दा रस इक्क चखवाईआ। इक्क खेल वेखणा वरतणा हौली हौली, मेरे ढईए तों बाद की आपणी कार भुगताईआ। नाले आशा पूरी करे धरनी धरत धवल धौली, जो धर्म दा राह तकाईआ। मेरा जुस्सा वेख मेरे फरकदे वेख डौली, जो दो जहान रहे डराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप वखाईआ।

कलिजुग कहे गोबिन्द तेरा की रूप होवेगा बलकार, बलधारी दे जणाईआ। गोबिन्द किहा कलिजुग पैहलों मेरे पुरख अकाल नूं कर निमस्कार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। फेर आ मेरी खण्डे दी थल्ले धार, खण्डा खिच्च के उत्ते दयां टिकाईआ। फेर कहीं मेरा कोई नहीं यार, बिनां गोबिन्द तों यराना सच ना कोई कमाईआ। फेर मैं तैनूं होर दयां अख्त्यार, मुखतारनामा नवां दयां लिखवाईआ। तूं चारों कुण्ट फिरीं गली बज़ार, कूचे काया वाले वेख वखाईआ। काया मन्दर अंदर कराईं विभचार, आपणा बल प्रगटाईआ। तेरा लहणा देणा फेर छेती देवां निवार, लोकमात रहण ना पाईआ। पर याद रखीं मेरा रूप हो जाए शब्द सतिगुर ते शब्द दी धार, पंजां तत्तां तत्त ना कोई जणाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां करांगा ख़बरदार, बेख़बरां इक्को हुक्म हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा लेखा दिआं समझाईआ।

गोबिन्द किहा कलिजुग आह मेरा कन्ना वेख लै विच्च कायनात, दीन दुनी देणा समझाईआ। जिस वेले तेरी अन्त आई अन्धेरी रात, मुहम्मद दी चौधवीं सदी बैठे आपणा पन्ध मुकाईआ। मूसा वेखे मार झात, वीहवीं सदी नैण उठाईआ। ओस वेले कोई आत्म दा देवे ना साथ, परमात्म रंग ना कोई रंगाईआ। अंदरों निझर झिरने विच्चों बूंद ना मिले सवांत, बाहरों पी पी के आपणा ढिड भराईआ। अन्तश्करन किसे दा ना होवे साफ़, पत्तित पुनीत ना कोई रखवाईआ। मिले मेल ना कमलापात, पतिपरमेश्वर आपणी गोद ना कोई टिकाईआ। ओस वेले लेखा होणा ओस साहिब अबिनाश, जो अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। जिस ने मण्डल

मंडप पाउणी रास, लक्ख चुरासी गोपी काहन निरगुण सरगुण धार आत्म परमात्म वेख वखाईआ। उस दा रूप रंग रेख ना कोई ज़ात पात, दीन मज़हब वंड ना कोई वंडाईआ। ओस ने हुक्म देणा शंकरा उठ खलो उत्तों कैलाश, कला आपणी लै प्रगटाईआ। उह ब्रह्मे आपणा लेखा लै वाच, परदा परदिआं विच्चों खुल्ह़ाईआ। विष्नूं तूं केहड़ी दिन्दा दात, चारों कुण्ट भज्ज आपणा पन्ध लै मुकाईआ। फेर हुक्म सुण ओस प्रभू दा साख्यात, जो साख्यात जगत जहान दीन दुनी वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा दए लिखवाईआ।

धरनी कहे हाए एह केहो जेहा वेला आउणा वक्त, प्रभू की तेरी बेपरवाहीआ। की सारी दुनियां सृष्टी तैनूं भुल्ल जावे जगत, जागरत जोत बिन वरन गोत ना कोई रुशनाईआ। कोटां विच्चों कोई दिसे तेरा भगत, भगवान तेरा दरस कोई ना पाईआ। उह किस लेखे लग्गेगी बूंद रक्त, जनणी कुक्ख कवण वडयाईआ । झट्ट कलिजुग ने किहा उह धरनीए मेरी गोबिन्द नाल शर्त, ओन मेरी शरअ दित्ती बणाईआ। उस मैनूं प्यार दित्ता दिलासा दित्ता जिथ्थे मेरे बच्चे नीहां उत्ते आए फर्श, एस फर्श उत्ते फैसला तेरे हत्थ रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। (१४ अस्सू श सं ८)

**कुत्ता : कूकर** : माणस हो के मास जो खावे। कूकर सूकर दी जून नित्त पावे। पी शराब होवे मस्ताना। पसू जून विच्च ओस है जाणा। (१७ भादरों २००६ बि)

मदि मास जिन रसनी लवाया। कूकर सूकर माणस रूप बणाया । ऐसी सतिगुर दे सज़ाया। गुर चरनां तों परे हटाया। परेत जून उन्ह़ां नूं पाया। ईशर जीव जिस जीव ने खाया। लक्ख चुरासी चक्कर लवाया। (५ चेत २००७ बि)

कलिजुग जीव बेमुख कुत्ते, बिरधां बाल अंञाणयां हत्थ ना आवे नीर। (१ माघ २००६ बि) कुत्ते कूकर कुड़िआर बाहर खलोते दूरों वेखण रहे झक्ख मार। अग्गे आवण आवे डर, सच तख्त बैठा आप सच्चा सरदार। (३ माघ २०१० बि)

पकड़ उठए जूठा झूठा मायाधारी कुत्ता, शब्द डण्डा रिहा मार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर अवतार। (२६ पोह २०११ बि)

काया भाण्डा मन कुत्ता बण के रिहा लक, पर्दा कोई ना सके पाईआ।(१ भादरों २०१८ बि)

राजे राणे जंगलां विच्च फिराए ख़रगोश, कलिजुग कूड़ी क्रिया कुॅते मगर लगाईआ । (१६ मध्घर २०१६ बि)

कूड़ी क्रिया कूड़ कुड़िआरे कुत्ते, कूकर शूकर जून भवाइंदा। (२४ चेत २०२० बि) चौकीदार हो के पंच विकार तुहाढ्ढे मोड़े कुत्ते, बण सेवक सेव कमाईआ। (८ अस्सू २०२० बि)

जगत प्रीती दर दर दी कुत्ती, बण सुआन घर घर फिरे भज्जे वाहो दाहीआ। बिन सतिगुर किरपा होवे लुच्ची, लुच्ची गुंडिआं नाल रलाईआ। (६ पोह २०२० बि)

मन वासना तुहाढ्ढे कोल ना आवे कुत्ती, कूकर सूकर परे दए भजाईआ। मन ममता नार कमज़ात कोल रहे ना लुच्ची, कुलखणी रूप ना कोई वखाईआ। (१ वसाख २०२१ बि)

ख़ाहश कहे मैं घर घर फिरदी रही सवान बण के कुत्ती, ख़ाली भाण्डे वेख भज्जां वाहो दाहीआ। (८ सावण २०२१ बि)
गुरमुख दवारा सोहणा उच्चा, ऊँचो ऊँच दए वडयाईआ। तीर्थ तट्टां नालों सुच्चा, मन्दरां मट्ठां नालो सोभा पाईआ। उथ्थे हँकारी पुजारी कोई ना रहे वासना कुत्ता, सवान रूप हो के भज्जे ना वाहो दाहीआ। उस दा मालक पुरख अकाल दा पुत्ता, पत सभ दी रिहा समझाईआ। (४ अस्सू २०२१ बि)

**कुफर** : बेमुख जूठ्ठा झूठ्ठा बिल्ला सीर पीवे कुफर कुफार दा। (१४ मध्घर २०१० बि)
कलिजुग माया काली रैण, चारों कुण्ट अन्धेर पसारया। एका वगे कुफर हँकारी वहण, ना कोई जाणे जीव संसारया। (१२ कन्तक २०१२ बि) (सच नूं छुपाउण दा कर्म)

**कुंभ :** झूठी देह विच्च प्रीतम साचा। झूठी काया जिउँ कुंभ काचा । (२ कत्तक २००७ बि)
आत्म परमात्म वेख रल के, रंग राता आप जणाइंदा। भगत सिँघासण वेख मल्ल के, जिस घर श्री भगवान फेरा पाइंदा। निरगुण जोत वेख बल के, बिन तेल बाती डगमगाइंदा। साचे मन्दर वेख वड़ के, निरगुण इक्को नज़री आइंदा। सच सिँघासण वेख चढ़ के, सो पुरख निरञ्जण गोद बहाइंदा। जींवदयां जग वेख मर के, मर जीवत आपणे नाल रखवाइंदा। प्रेम प्रीती पाणी वेख भर के, काया कुंभ घड़ा अमृत नाल भराइंदा। बिरहों वैराग अंदर वेख सड़ के, अगनी जोती रूप जणाइंदा। प्रभ चरनां सीस वेख धर के, धर धरनी धरत लेखा आप मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां खेल वखाइंदा। (१६ जेठ २०२० बि)
फर साचे अंर्मित करा इशनान, काया कुंभ दित्ता भराईआ। (१४ चेत श सं ४)
मात गर्भ दे सारे उलटे दिसदे रुक्ख, कुम्भी वास बाहर ना कोई कराईआ। (२२ अस्सू श सं ६)
दुनियां लुट्टी जाणी विच्च हासे, हस्ती प्रभ दी समझ कोई ना पाईआ । तन वजूद मिट जाणे वांग पतासे, जल कुंभ दए गवाहीआ। (१६ कत्तक श सं ७)

**कुंभी नरक :** जो जन निन्दया सतिगुर दी करे। नरक कुण्ड में सदा ही जले। कुंभी वास नरक दुःख भरे। धर्म राए दा डण्ड सिर परे। काल की मुंगली मारां सिरे। जून घोगढ़ विष्ट उह पड़े । जिस मुख नाल निन्दया करे। विष्टा विच्च चुंझ उह धरे । जन्मे मरे मरे मर जन्मे। सतिगुर किरपा मिले ना सरने। (१५ मध्घर २००६ बि) मदिरा मास जो करे अहार । कुंभी नरक दित्ता डाल। जम्मे मरे होए खुआर। बिन गुर कोई ना लावे पार। हाहाकार करे दुराचार। कूकर शूकर जून उतार । (२५ पोह २००६ बि)
कुंभी नरक करे रिहाइश, जिन्नां भुलया बेपरवाहीआ। जन्म जन्म होवे पैदाइश, लक्ख चुरासी विच्च भवाईआ। (२५ भादरोंग २०२० बि)

**कुलख्वणी :** साचा नाम ना किसे भिच्छया पावणा, कलिजुग जीव कुलक्ख्वणी नार। (७ मध्घर

२०१० बि) बेमुख जीव कुलक्खणी नार, एथ्थे ओथ्थे होए अन्धी। (२–३ माघ २०१० बि)
कर्महीण नार कुलक्खणी कमजाता, साचा कन्त ना सेज हंढ्ढाया। (२ फग्गण २०१२ बि)
कलिजुग कूड़ी क्रिया कढ्ढु नार कमज़ात, कुलक्खणी लोकमात रहण ना पाईआ। झगड़ा मुक्के ज़ात पात, चार वरन अठारां बरन इक्को घर वसाईआ। चरन प्रीती बख्श साचा नात, तूं मेरा मैं तेरा तेरी कदे ना होवे जुदाईआ। (२३ भादरों २०२१ बि)
मनमत दूर ना होई कमज़ात, कुलक्खणी घरों बाहर ना कोई कढ्ढाईआ। (१५ मध्घर २०२१ बि)
मनमुखता कुलक्खणी रहण नहीं देणी नार कमजात, बुद्ध बबेक देणी बणाईआ। (१४ जेठ श सं ४) (पिर दा हुक्म ना जानण वाला)

**कुलां :** कुल ओस दी वधण ना पाए। जो सिख उपर चोट चलाए। (१ विसाख २००७ बि)
कुल दित्ती तेरी तार, पाल सिँघ तुध होए वधाई। कलिजुग होवे अन्ध अंधिआर, ललीआं नाउँ जग रहि जाई। (५ चेत २००८ बि) इक्की इक्की कुलां देवे तार, जो चल आए सरनाईआ। (२२ चेत २०२० बि) जिस दवारे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण सरूप सति सतिवादी आए लँघ, तिन्नां इक्की कुलां पार कराइंदा। (२२ जेठ २०२० बि)
इक्की कुलां काया अंदर देवे तार, गोबिन्द वेख वखाया। (२१ मध्घर २०१६ बि)

नौं दवारे नौं कुलां, तन दवारे आप वसाइंदा। सृष्ट सबाई रही अनभोल, हरि का भेद कोई ना पाइंदा। पंज विकारा वेखे फोल, पंचम नाल रलाइंदा। चौदां कलां होया अडोल, हरि साचा आप डुलाइंदा। आसा तृसना करे चोल्ल, साचा रंग रंगाइंदा। सोलां कलां आपे मौल, कँवला कँवल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाइंदा।
सोलां कलां करे खण्ड खण्ड, हरि साच सच्ची वडयाईआ। जूठ झूठ करे रंड, माया ममता मोह चुकाईआ। हउमे हंगता भेख पाखण्ड, दूई द्वैती दए मिटाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, एका नाम करे पढ़ाईआ। सोलां कलां करे दवार बन्द, आपणी हत्थीं कुण्डा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरी काया अंदर तेरी कुल दए समझाईआ।
सोलां कुलां काया अंदर, पंज तत्त रंग रंगाईआ। त्रैगुण माया बणया मन्दर, राजस तामस सांतक खेल खिलाईआ। वेखणहारा अन्धेरी कुंदर, डूंघी भवरी फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा संग रखाईआ। (२१ मध्घर २०१६ बि)
तारनहारा इक्की इक्की कुल, इक्की इक्की कुला सेवा लाइंदा। करता कीमत पाए मुल, लेखा आपणे हत्थ रखाइंदा। (१८ हात २०१६ बि)

**कूड़ :** झूठी दुनियां कूड़ो कूड़। (१६ मध्घर २००६ बि)
कूड़ी माया एह जगत पसार। (१७ वसाख २००७ बि)

गुर का शब्द काया कूड़ी विच्च देवे चानण। (२ भादरो २००७ बि) (असति)

**कोईल** : गुर तेग़ बहादर कोल ना डग्गा ना कोई ढोल, नौबत जगत ना कोई वजाईआ। उस दे प्रेम दा इक्क परिंदा बाहरों काला ते ओस नूं कहन्दे कोयल, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। उह ठीक साढ़े तिन्न वजे पैंदी सी बोल, आपणी सेवा सच कमाईआ। गुर तेग़ बहादर उठ पैंदा सी अडोल, आपणी अक्ख खुल्ह़ाईआ। इक्क दिन कलिजुग ने कां बण के मारया रोल, आपणी आवाज़ सुणाईआ । तेग़ बहादर किहा कूड़े कदे ना तुले गुरमुखां तोल, एह आवाज़ मोहे ना भाईआ। जो प्रेम विच्च मन्ने आपणा आप चरनां उत्तों गए घोल, उहनां दा सुरताल किसे नाल कदे रल ना पाईआ। (१७ पोह २०२१ बि)

कलिजुग कहे —— किसे दी रहण नहीं देणी कोयल वाली मिट्ठी बोली, काग अंदरों देणे बणाईआ। मन कल्पणा अंदर सारे पावण रौली, झगड़ा वेखणा जगत लोकाईआ। (१ जेठ श सं ४)

**कन्त** : सृष्ट हरि नार, आप प्रभ कन्त। (१५ वसाख २००७ बि)
पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, आया जग भतार, कन्त ने भेस वटाया। (२४ वसाख २००७ बि)

हरि साचा खेल खलाया, थिर घर खोल्ह़ किवाड़। नारी कन्त आप अखवाया, पुरख अबिनाशी बेऐब परवरदिगार। साची सेज आप सुहाया, मेल मिलावा अपर अपार। जनणी जन आप बण जाया, दाई दाया बण आप निरँकार । शब्द दुलारा एका जाया, नाउँ रखाया नाउँ निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी धार। (२६ पोह २०१७ बि)

**कन्तूहल** : गुरमुख गुरसिख हरिभगत हरिसन्त पुरख अबिनाशी एका वरया, कन्त कन्तूहल वड्डी वडयाईआ। (१ माघ २०१७ बि)
सच सिँघासण इक्क वखाए ना कोई पावा ना कोई चूल, निरगुण आपणी सेज सुहाईआ। नारी मिले कन्त कन्तूहल, गुरमुख आत्म वज्जे वधाईआ। (३ माघ २०१७ बि)

मेल मिलावा नारी कन्त भतारा, कन्त कन्तूहल आप अखवाइंदा। (६ माघ २०१७ बि) अजूबा

**खसम** : आपे आप खसम खसम नर निरंकारया। जोती नारी पिरम प्यारी पावे आपे सारया। (१ माघ २०१२ बि)
जन भगत कहण अज्ज तों साड्डी आत्मा तैनूं वरदी, दूजा खसम ना कोई हंढ्ढाईआ। (२६ पोह श सं १)
दस गुरू कहण उह सभ दा इक्क खावंद, खसम नानक कह के गाईआ। (१ भादरों श सं ४)

**खालस खालसा :** धरनी कहे मेरे उत्ते तेग बहादर अंदर सुणया ललकारा, धर्म धार वज्जी वधाईआ। ढाके विच्च होया चमत्कारा, नूर नुराना दित्ता चमकाईआ। मैं झट्ट कीती निमस्कारा, निव निव लागी पाईआ। मंग मंगी फेर कद आवे दुबारा, आपणी दया कमाईआ। गुर तेग बहादर इशारा कीता जगत जहान दी नज़र तों बाहरा, असमानां उतों दित्ता दृढ़ाईआ। मेरा गोबिन्द तत्तां वाला दुलारा, जोती धार जिस दा पुरख अकाला पिता माईआ। दीन दुनी विच्च होवे जाहरा, जाहर आपणी कल वरवाईआ। पन्थ खालसा कर त्यारा, त्रैगुण अतीता रंग रंगाईआ। पुत्रां वारे नाल परवारा, शहादत माता गुजरी वाली भुगताईआ। माछूवाड़े खेल करे अपारा, सोहणी सेज हंढ्ढाईआ। संदेशा देवे धुर दे यारा, पुरख अकाले आप सुणाईआ। उठ वेख लै आपणा संसारा, दीन दुनी ध्यान लगाईआ। धर्म दा दिसे ना कोई सहारा, सति विच्च ना कोई समाईआ। मेरे ढईए दा लेखा होवे जगत किनारा, मुहम्मद दी चौधवीं सदी नाल मिलाईआ। तूं वेखीं विगसीं पावीं सारा, बिन नैणां नैण उठाईआ। निरगुण धार आउणा कल कलकी अवतारा, निहकलंका नाउँ रखवाईआ। धवल कहे मेरा पूरा होए कौल इकरारा, सतिगुर तेग बहादर दए वडयाईआ। मेरा स्वामी अन्तरजामी अन्त मेरी पावे सारा, शहनशाह आपणे रंग रंगाईआ। जिस दा खेल सदा जुग चारा, सतिजुग त्रेता दवापर कलिजुग खेल खिलाईआ। उह नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप निगाह मारे आप निरँकारा, बिन नैणां नैण उठाईआ। मैं ओस दा शुकर गुजारा, निव निव लागा पाईंआ। जिस ने मगरब मशरक दित्ता सहारा, सिर मेरे हत्थ रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। (३० फग्गण श सं ६)

पुरख अबिनाशी आप आपणी जोत जगा, चारों कुण्ट करे रुशनाईआ। शब्द निराला तीर चला, लक्ख चुरासी दए खपाईआ। शाह कंगाला वेख वखा, दो जहानां फेरा पाईआ। तालब तलथ पूरी दए करा, गालब गलब आप अखवाईआ। सालस होवे विच्च जहां, सच सालसी आप कराईआ। चार वरनां खालस खालसा दए बणा, एका मंत्र नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग कूड़ करे जुदाईआ। (२७ पोह २०१४ बि)

**खंग :** जन्म जन्म दा पूरब पाप, जीवां जंतां रिहा सताईआ। जिस जन लग्गया खंग ताप, एका भुल्लया हरि रघुराईआ। जो जन रसना जपे सोहँ जाप, तीनों ताप दए मिटाईआ। इक्क वखाए साचा हाट, सतिगुर पूरा नज़री आईआ। गुरमुख गुरमुख गुरमुख ना सोए किसे खाट, हेठां सत्थर ना कोई विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, दुःख दलिद्र दए मिटाईआ।

खंग ताप जाए मुक्क, जिस हरि हरि दर्शन पाया। काया मन्दर विच्चों जड़ देवे पुट्ट, सोहँ तिक्ख़ी मुक्खी आप लगाया। अमृत जाम प्याए घुट्ट, सांतक सति आप कराया। मनमुखां भाग जाण निखुट, जो बैठे मुख भवाया। कलिजुग अन्तम पैणी लुट्ट, हरि का रूप बण के हरि हरि आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां कट्टे हउमे रोग, शब्द कराए सच संजोग आत्म सेजा भोगे भोग, जगत विजोग ना कोई रखाया।

खंघ ताप करे पुकार, जिस दर हरि हरि चरन टिकाइंदा। गुर का शब्द मारे मार, साचा

खण्डा हत्थ चमकाइंदा। उच्ची रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बल आप धराइंदा।
आपणा बल आपे रक्ख, आपणी दृष्टी आपे पाईआ। आपे काया विच्चों खंग ताप करे वक्ख, किशना सुखला पख वेख वखाईआ। गुरमुखां रच्छया करे नस्स नस्स, आत्म भिच्छया एका झोली पाईआ। साचा मार्ग जाए दस्स, सोहँ साचा शब्द पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। (६ जेठ २०१७ बि)

**खण्डा :** कोई ना जाणे प्रभ की सारा । सोहँ शब्द चले खण्डा दो धारा । (३ चेत २००८ बि)
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग प्रगट सोहँ खण्डा दो धार चलाया। सोहँ शब्द खण्डा दो धारी। भगतां देवे नाम अधारी। बेमुखां करे खुआरी। (८ सावण २००८ बि)

**खिमां ग़रीबी :** खिमां ग़रीबी ठाकर घर, हरि ठाकर सच समझाइंदा। निवण सो अक्खर वेस कर, हरि कन्त मेल मिलाइंदा । आवण जावण चुक्के डर, निरभौ भय अवर ना कोई रखवाइंदा। गुरमुख नारी एका वारी लए वर, कन्त सुहाग आपणा रंग रंगाइंदा। काया चोली रंग जाए चढ़, शब्द ललारी आप रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खिमां ग़रीबी आपणे रूप समाइंदा।
खिमां ग़रीबी हरि का भाओ, हरि भगतन झोली पाइंदा। एका मार्ग दस्से सच्चा राहो, हरि मंत्र नाम दृढ़ांइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। सदा सुहेला बणें पिता माउँ, गुरसिख बाल अञाणे गोद बहाइंदा। इक्क इकेला सिर देवे ठंडी छाउँ, गोबिन्द सूरा सेव कमाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर करे सच न्याउँ, सच अदालत आप कराइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खिमां ग़रीबी वेख वखाइंदा।
खिमां ग़रीबी डूंघा सागर, हाथ किसे ना आईआ। जिस जन निर्मल कर्म करे उजागर, तिस जन खिमा ग़रीबी दए समझाईआ। अमृत जाम प्याए काया गागर, निझर झिरना आप झिराईआ। करे मेहर हरि करता कादर, करीम रहीम सच्ची सरनाईआ। खिमां ग़रीबी हंडाई गुर तेग़ बहादर, सीस जगदीस भेट चढ़ाईआ। सिदक सबूरी रक्खया साबर, दर घर साचे सोभा पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर देवे आदर, जिस जन खिमां ग़रीबी इक्क हंढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, याचक एका दान झोली पाईआ।
खिमां ग़रीबी गुर चरन देव, देव इष्ट आत्मा मेल मिलाइंदा। अलक्ख अगोचर अभेद अभेव, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। अमृत रस देवे मेव, फल अमृत आप खवाइंदा। गुरसिख खिमां ग़रीबी हरि सतिगुर सेव, बिन सतिगुर पार ना कोई कराइंदा। बिन हरि नामे किसे ना कम्म रसना जेहव, रसना रस कम्म किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आत्म वर, खिमां ग़रीबी इक्क सिखाइंदा।
खिमां ग़रीबी सिख्या सिख, गुरमुख लए वडयाईआ। जन्म जन्म दी मिटे तृख, तृसना तृप्त आप कराईआ। किसे हत्थ ना आवे मुन रिख, जपी तपी हठी सत्ती रहे कुरलाईआ।

किसे नेत्र जगत ना आवे दिस, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। चार जुग गुरमुखां वंडाया हिस्स, साचा हिस्सा इक्क रखाईआ। सो साहिब सतिगुर देवे तिस, जिस धुर मस्तक लेख लिखाईआ। आपणा नाम पढ़ाए अक्खर निश, निशअक्खर करे पढ़ाईआ। सति सरूपी आए दिस, स्वच्छ सरूपी रूप धराईआ। हरिजन लेखा आपे लिख, पूरब लेखा लेखे लाईआ। सृष्ट सबाई जाणो मिथ, थिर कोई रहण ना पाईआ। सतिगुर पूरा देवे कदे ना पिठ, जो जन रहे सरनाईआ। दो जहानां बणे खेवट खेट, भव सागर लए तराईआ। शब्द दोशाले लए लपेट, प्रेम पटोला उपर पाईआ। गुरसिख तेरा चिढ़ीआं चुगण ना काया खेत, फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। गुर सतिगुर पूरा गोबिन्द गुरसिखां संग करे हेत, नित नवित्त भुल्ल ना जाईआ। गुरसिख होए चेतन्न चेत, चेतन्न चित खिमां ग़रीबी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग दए रंगाईआ। खमां ग़रीबी गुर गुर चरन, मस्तक धूढ़ी टिक्का लाया। नेत्र खोल्हे हरन फरन, धुर दा लेखा दए चुकाया। नाता तुटे जन्म मरन, लक्ख चुरासी फंद कटाया। किरपा करे हरि करनी करन, करता पुरख दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाया।

खिमां ग़रीबी गुर गुर मेला, गुर सतिगुर दए वडयाईआ। चाकर चाकरी चाकर लेखे लाए गुर गुर चेला, चेला गुर रूप वटाईआ। सतिगुर साजन सज्जण सुहेला, मीत मुरारा इक्क अखवाईआ । सदा सदा सद वसे नवेला, अनडिठड़ा धाम आप सुहाईआ। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, थित वार ना कोई वखाईआ । कलिजुग अन्तम पारब्रह्म प्रभ आपे खेला, गोबिन्द शब्द रूप वटाईआ। जन भगतां लक्ख चुरासी कट्टे धर्म राए दी जेला, सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवारे दए बहाईआ। निवण सो खिमां ग़रीबी सिक्खण एका वेला, दूजी सतर पढ़न किते ना जाईआ। पुरख निरञ्जण शेर सिँघ हो हो बुक्के विच्च कलिजुग जंगल जूह उजाड़ बेला, गोबिन्द खण्डा तीर कमान हत्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग आपे रिहा वखाईआ।

धन्न कमाई भगत जन, जिन हरि हरि सज्जण पाया। धन्न कमाई सन्त जन, जिस सतिगुर मेल मिलाया। धन्न कमाई भगत जन, जिन मन का भउ चुकाया। धन्न कमाई भगत जन, जिन सहिँसा रोग मिटाया। दो जहानां विचोला आपे बण, पुरख अबिनाशी खेल खिलाया। गोबिन्द बेड़ा देवे बंन, मंझधार पार कराया। साचे घर बहाए ना कोई छप्पर छन्न, सूरज चन्द ना कोई चढ़ाया । सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा आप आपणे गुरमुख साचे लड़ लए बंन, पल्लू एका नाम फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां कहे धन्न वड्डिआई, जिस मिल्या हरि रघुराई, जगत विसरी दात पराई, पुरख परखोतम एका पाया।

वाक भविख्त सच संदेसा, लहणा देणा दए चुकाईआ। लहणा देणा चुकाए ब्रह्मा विष्न महेशा, सुरप्त राजा इन्द रहण ना पाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी चुके लेखा, सत्त दीप देण दुहाईआ। लक्ख चुरासी चले ना कोई पेशा, शाह सुल्तान ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। (१७ जेठ २०१८ बि)

* * * * *